चन्दामामा
अक्तूबर १९७५
1 रु०

Photo by : NIRMAL SINGH

RELIGIOUS PARADE

आपके मनोरंजन के लिये

डायमंड मिनी सीरिज में

बाल जासूसी उपन्यास

स्मगलरों के देश में	मौत की घाटी में
शैतान के पंजे में	जहरीला आदमी
सुनहरी नागिन	ईंट की बेगम
पागलों के देश में	खून के पुजारी
चोरों का कब्रिस्तान	मोम की पुतली

ये पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं

ये उपन्यास आशू बंटी और निशा के साहसिक कारनामों से भरपूर हैं। रोचक इतने कि बस एक बार शुरू करने की देर है, फिर बिना पूरा पढ़े रह नहीं सकेंगे।

प्रत्येक का मूल्य डेढ़ रुपया

६ पुस्तकें या इससे अधिक मंगाने पर डाक व्यय हम देंगे -

पंजाबी पुस्तक भंडार दरीबा कलां दिल्ली-६

बाल-लेखकों के लिए

स्वान

जूनियर पेन

SWAN

बढ़िया लिखावट के लिए, इस्तेमाल कीजिए **स्वान** डीलक्स स्याही

स्वान (इण्डिया) प्राइवेट लिमिटेड

बम्बई—नई दिल्ली

मैं गंदे पैरों से भला प्लूटो को अन्दर कैसे लाता?
HT-HSI 8124 R
अन्तर्राष्ट्रीय गुणमान के अनुरूप निर्मित सैनेटरीवेयर और वॉल टाइल
VITREOUS
हिन्दुस्तान सैनेटरीवेयर एण्ड इण्डस्ट्रीज़ लिमिटेड
२ वेलेसली प्लेस, कलकत्ता ७०० ००१
सोमानी-पिलकिंगटन्स लिमिटेड
कसार, रोहतक, हरियाना

स्कूल के लिए
बाटा के
जूते
Bata

चन्दामामा

संस्थापक : नागिरेड्डी
संचालक : 'चक्रपाणी'

इस महीने की बेताल कथा–"सच्चा मित्र" है। सच्ची मित्रता का यह उत्तम नमूना है। हमारे समाज में मनौतियाँ मनाने का एक विचित्र रिवाज है। देवताओं में हमारी कामनाओं की पूर्ति करनेवाली अमानवीय शक्तियाँ हैं, पर हम मनौती के रूप में जो नारियल तथा पशुओं की बलि चढ़ाते हैं, उन्हें प्राप्त करन की शक्ति देवताओं में नहीं है, यह बताना इस कहानी की अनोखी बात है। "झूठे वादे" नामक कहानी इस का प्रमाण है।

वर्ष : २८ अक्तूबर १९७५ अंक : ४

मित्र-भेद

[२७]

दुष्ट बुद्धि ने जल्द ही अपनी सौ स्वर्ण मुद्राएँ खर्च कर डालीं। एक दिन वह धर्मबुद्धि को साथ ले उस जगह पहुँचा जहाँ पर उसने धन गाड़ रखा था। दोनों ने पुनः सौ-सौ स्वर्ण मुद्राएँ ले लीं। लेकिन साल भर पूरा होने के पहले ही दुष्टबुद्धि ने वह सारा धन खर्च कर दिया।

दुष्टबुद्धि का यह विचार था कि इस प्रकार एक-दो बार धर्मबुद्धि को साथ ले जाकर थोड़ा-थोड़ा करके गड़ा हुआ धन लाया जाय और उसके मन में विश्वास जम जाने के बाद सारा धन धोखे से हड़प ले। अब केवल छे सौ स्वर्ण मुद्राएँ बची थीं। सारा धन स्वयं हड़पने के विचार से एक दिन अर्द्धरात्रि के समय दुष्टबुद्धि अकेले ही चला गया। पात्र में से छे सौ स्वर्ण मुद्राएँ लेकर उस पात्र पर ढक्कन बांध दिया और पूर्ववत् उसे गाड़कर चला आया।

एक महीना बीत जाने पर दुष्टबुद्धि धर्मबुद्धि के यहाँ जाकर बोला–"दोस्त! बचा हुआ धन भी हम दोनों बांट लेंगे।" धर्मबुद्धि ने दुष्टबुद्धि की बात मान ली।

दोनों ने उस जगह ज़मीन खोदकर पात्र निकाला तो उसमें स्वर्ण मुद्राएँ न थीं। इस पर दुष्टबुद्धि क्रुद्ध हो बोला–"धर्मबुद्धि! मैंने तुम पर विश्वास किया तो तुमने मुझ को दगा देकर सारा धन हड़प लिया? मेरा हिस्सा मुझे दे दो तो मैं चुप रह जाऊँगा, वरना मैं न्यायालय में जाकर तुम पर नालिश करूँगा।"

अंतिम पृष्ठ का चित्र

"अरे मूर्ख! मैं अपने दोस्त को दगा देनेवाला दुष्ट नहीं हूँ। तुम अपने मुंह से ऐसी बातें मत निकालो, समझें!" धर्मबुद्धि ने क्रोध में आकर डांटा।

दोनों के बीच झगड़ा बढ़ता गया। आखिर न्यायालय में जाकर एक ने दूसरे पर नालिश की। दोनों के कोई गवाह न थे, इसलिए न्यायाधिकारियों ने तत्काल कोई निर्णय नहीं दिया, पाँच दिन तक दोनों को कारागार में रखा।

छठे दिन न्यायाधिकारियों ने बताया कि हम दोनों की अग्नि-परीक्षा लेंगे। इस पर दुष्टबुद्धि ने आपत्ति उठाई और कहा–"यह तो सरासर अन्याय है। उसी हालत में अग्नि-परीक्षा ली जा सकती है जब दोष को साबित करने के लिए कोई दस्तावेज़ या गवाह नहीं होते हैं। मगर हमने जहाँ धन गाड़ रखा था, वहाँ तो एक वृक्ष था। वही वृक्ष देवता गवाह दे सकता है कि हम में दोषी कौन है? उस गवाह को सुनने के बाद आप अपना फ़ैसला सुना सकते हैं।"

न्यायाधिकारियों ने दुष्टबुद्धि की बात मान ली। दूसरे दिन वृक्ष देवता का गवाह सुनने का निर्णय किया और उचित ज़मानत पर दोनों को रिहा किया।

दुष्टबुद्धि ने अपने पिता से कहा– "पिताजी! धन तो मैंने ही हड़प लिया है। यदि तुम एक बात कह सकोगे तो वह धन हमारा हो जाएगा। आज रात
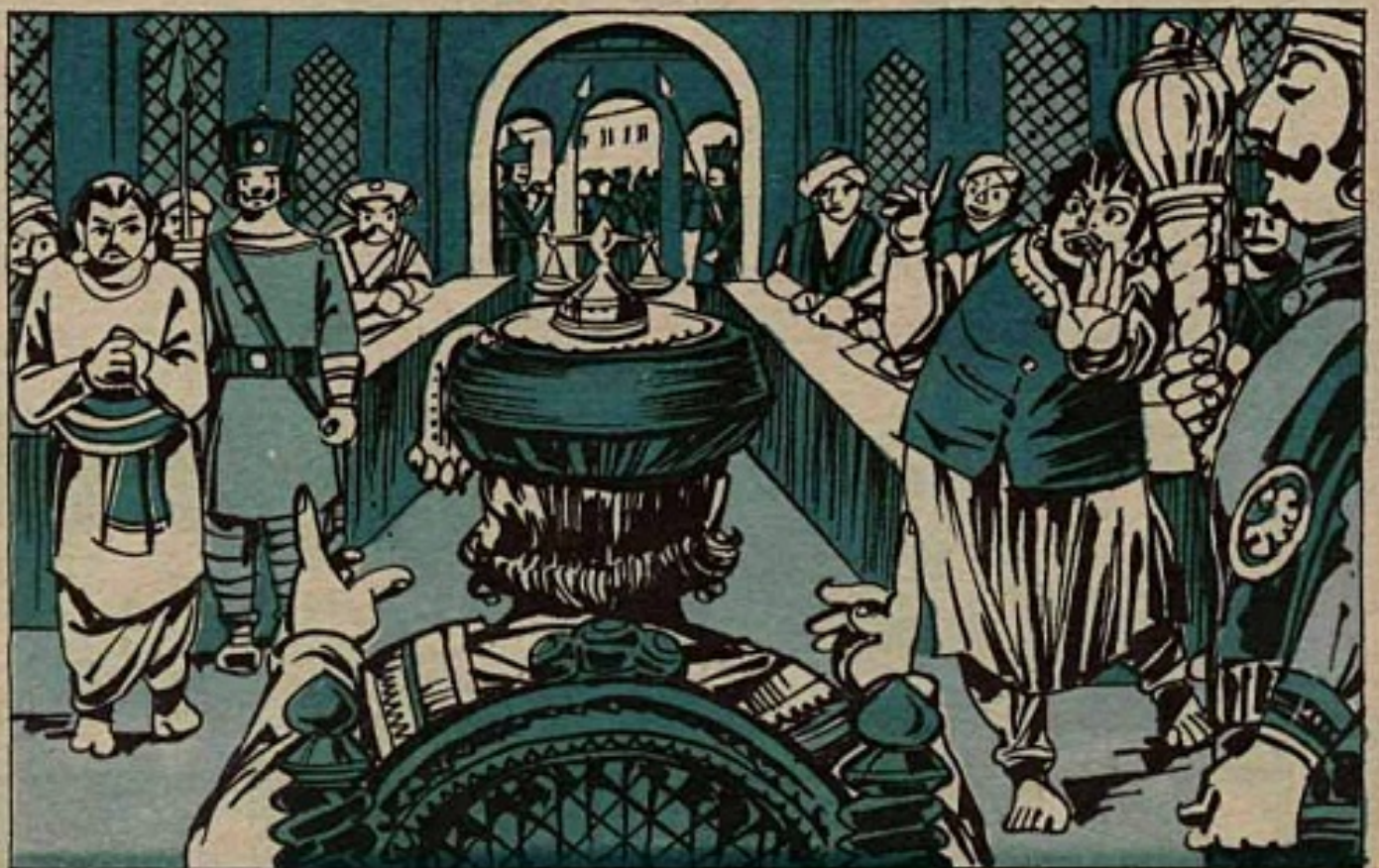
को मैं तुम्हें उस वृक्ष के पास ले जाऊँगा। तुम उस वृक्ष के खोखले में छिप जाओ। कल सवेरे न्यायाधिकारी आकर जब तुम से पूछेंगे कि धन किसने निकाला है तब तुम्हें कहना होगा कि धर्मबुद्धि ने ही धन निकाला है।"

इस पर दुष्टबुद्धि के पिता ने समझाया-"बेटा! ऐसी धोखा-धड़ी करने पर हम दोनों का सर्वनाश होगा। विवेकशील व्यक्ति को चाहिए कि वह जो भी योजना बनावे, उसकी तृटियों पर भी सावधानी से विचार करे, वरना बगुले की गत हो जाएगी।"

"बगुले का क्या हुआ?" दुष्टबुद्धि ने पूछा! दुष्टबुद्धि के पिता ने बगुले की कहानी यों सुनाई: एक जंगल में एक बरगद के खोखले में बगुले का दंपति निवास करता था। उसके नीचे की बांबी में एक नाग रहा करता था। एक बार नाग ने खोखले में जाकर बगुले के बच्चे को खा डाला।

इसे देख मादा बगुला तालाब के किनारे पर बैठकर रो रहा था। एक केकड़े ने बगुले को रोते देख पूछा-"मामाजी, तुम रोते क्यों हो?"

"एक दुष्ट सर्प हमारे पेड़ के नीचे की बांबी में रहता है। उसने आज मेरे एक बच्चे को खा डाला है। कल बाक़ी बच्चों की भी यही हालत होगी। ऐसी हालत में मैं रोऊँ नहीं तो करूँ ही क्या?" बगुले ने जवाब दिया।

केकड़े ने सलाह दी-"देखो मामा! नेवला जिस सुरंग में रहता है, वहाँ से सांप की बांबी तक तुम मछली के टुकड़ों को डाल दो। नेवला उन टुकड़ों को खाता जाएगा और आखिर सांप को भी मार डालेगा।"

इस काम से होनेवाली हानि का ख्याल किये बिना मूर्ख बगुले ने ऐसा ही किया। नेवले ने आकर सांप को तो मार डाला, साथ ही पेड़ के खोखले में स्थित बगुले के बाक़ी बच्चों को मार कर चला गया।

विचित्र जुड़वाँ

[१५]

[राक्षस यह सोचकर प्रसन्न हुआ कि उसके लिए आवश्यक जुड़वें मिल गये, इसलिए उनकी बलि देकर देवी को प्रत्यक्ष किया जा सकता है। मगर बलि देने के वक़्त तीनों राजकुमारियाँ विकलांग दिखाई दीं। इस पर राक्षस ने अपने सेवकों को सावधान किया, और वह गीध के रूप में बदलकर तीनों राजकुमारियों को उठाये उड़ गया। बाद...]

उदयन अदृश्य रूप में ही रहकर अपने भविष्य के बारे में तीव्रता के साथ विचार करने लगा। यदि भूगर्भ में स्थित महल में जाना चाहे, तो वहाँ पर उसके अंजन व भस्म काम नहीं दे सकेंगे, फिर भी इसकी जाँच करने के कुतूहल से प्रेरित होकर उदयन पत्तों के ढेर के पास पहुँचा और उस ढेर को हटाया।

उदयन ने देखा कि सामने एक सुरंग है और उसके भीतर जाने की सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। वह एक एक सीढ़ी उतरते भीतर चला गया। दस सीढ़ियों को पार करते ही वह अपने अदृश्य रूप को खोकर पूर्व रूप में उपस्थित हुआ। लेकिन वह डरकर वहीं पर नहीं रुका। दस और सीढ़ियाँ उसने हिम्मत करके पार कीं। बस, आगे उसके क़दम

नहीं उठे। सीढ़ियों के नीचे दो भयंकर सिंह मुंह बाये बैठे हुए थे, उन से भी डरावने दो साँप सिंहों के कंठों से लिपट कर ज़ोर से फुत्कार कर रहे थे। उन्हें देखते ही उदयन पल भर भी वहाँ नहीं रुका, एक ही छलांग में सुरंग के बाहर आया और पुन: अदृश्य रूप को प्राप्त हुआ।

इसके बाद उदयन सीधे सरोवर के निकट पहुँचा। सरोवर के चारों तरफ़ अग्नि कुंड धू धू करके जल रहे थे। राक्षसों का दल सावधानी से सरोवर का पहरा दे रहा था। अंग विकलता प्राप्त राजकुमारियों को राक्षस के द्वारा उठा ले जाने की बात उदयन नहीं जानता था। परंतु यूं ही वक़्त बिताने के ख्याल से उदयन ने सरोवर के हंसों की गिनती की तो उसने पाया कि हंस अड़तालीस के बदले पैंतालीस ही थे। अब वह शंका से भर उठा। उसने सोचा कि वे ही तीन राजकुमारियाँ गायब हैं और वे किसी खतरे में फंस गई हैं। मगर वह उस वक़्त कर ही क्या सकता था! किससे पूछने पर उसे सच्ची बात का पता लग जाएगा? यदि वह अपने निज रूप को धारण कर ले, तो राक्षसों का दल उसको पकड़ लेगा। यदि किसी न किसी रूप में हंस का रूप प्राप्त करना भी चाहे तो सरोवर के चारों तरफ़ अग्नि की ज्वालाएँ प्रज्वलित हो रही हैं।

इस बीच राक्षस ने सुहासिनी, सुभाषिणी तथा सुकेशिनी को एक भयंकर जंगल में ले जाकर वहाँ पर छोड़ दिया। वहाँ से जाते समय राक्षस ने राजकुमारियों को इसलिए गूँगी बना दीं कि वे राक्षस के जादू महल के रहस्य प्रकट न कर सके। पहले से ही अंग विकलता के कारण राजकुमारियाँ परेशान थीं, अब गूँगी भी हो जाने से एक दम वे तीनों विकल हो उठीं। अगर किसी न किसी तरह से

जंगल को पार करना भी चाहे तो लंगड़ी सुभाषिणी तथा अंधी सुकेशिनी को साथ ले जाना सुहासिनी के लिए संभव न था।

भाग्यवश एक राजा शिकार खेलते उस प्रदेश में आ पहुँचा। राजा ने उन राजकुमारियों को देखा। उन अनुपम सुंदरियों को विकलांग देख राजा चकित रह गया।

"तुम लोग कौन हो? इस भयंकर जंगल में क्यों रह रही हो?" राजा ने पूछा, मगर गूंगी होने के कारण राज कुमारियाँ कोई उत्तर दे न पाईं। हाथ के संकेतों के द्वारा अपनी हालत समझाने की कोशिश की, पर उनके संकेतों का अर्थ राजा की समझ में न आया।

राजकुमारियों का यह बुरा हाल देख राजा द्रवित हो बोल उठा—"तुम लोग गूंगी भी हों? यहाँ पर तुम लोग कैसे आ गईं? क्या कोई तुम्हें यहाँ छोड़ गया है? या तुम्हारे माता-पिता ने तुम लोगों को घर से निकाल दिया है?"

इसके उपरांत राजा ने उन कन्याओं से कहा—"बेटियो, तुम तीनों किसी उच्च परिवार की मालूम होती हों! किसी जबर्दस्त कारण से ही तुम लोग इस बुरी हालत में होगी! तुम्हें डरने की कोई जरूरत नहीं है। मैं अपने साथ तुम्हें ले जाऊँगा। तुम्हें मेरे महल में

इतनी ही आजादी मिलेगी, जितनी अपने घर में प्राप्त थी। मैं मालव देश का राजा है। मेरा नाम प्रताप सिंह है। शायद तुम लोगों ने यह नाम सुना होगा।" यों राजा ने उन्हें हिम्मत बंधाई।

ये बातें सुनने पर राजकुमारियों के चेहरे खिल उठे। राजा ने उन्हें अपने घोड़े पर बिठाया और वह भी उसके पीछे चल पड़ा। थोड़ी ही देर में राजा उन कन्याओं के साथ अपने महल में पहुँचा। तुरंत दरबारी पंडित को बुला भेजा और आदेश दिया कि राजकुमारियों का वृत्तांत जानने के लिए कोई उपाय हो तो सुझा दे।

दरबारी पंडित ने अपने सारे बुद्धिबल का प्रयोग करके विचार किया तो उसे आखिर एक उपाय सूझा। उसने थोड़ा बालू मंगाया, राजकुमारियों के आगे डलवाकर संकेत किया कि वे बालू पर लिखकर अपना परिचय दे।

पर सुहासिनी ने जवाब में आँसू बहाते ऐसा संकेत किया जिसका अर्थ था कि हम पढ़ी-लिखी नहीं हैं। सुहासिनी का यह संकेत पाकर दरबारी पंडित हताश हो गया।

"महाराज! मेरे दिमाग में जो एक उपाय सूझा, मैंने उसका प्रयोग किया, परंतु मैं सफल न हो सका। इससे बढ़कर कोई दूसरा उपाय भी नहीं सूझ रहा है!" दरबारी पंडित ने निवेदन किया।

राजा निराश हो उठा। पंडित को विदा करके दासियों को बुला भेजा और उन्हें आज्ञा दी–"तुम लोग इन तीनों कन्याओं की बड़ी सतर्कता के साथ सेवा करो, साथ ही इन्हें अंतःपुर में रखकर इनकी रक्षा इस प्रकार करना जैसे आँख की पुतली की पलकें रक्षा करती हैं।"

सुहासिनी, सुभाषिणी तथा सुकेशिनी राजा के अंतःपुर में किसी भी प्रकार

की असुविधा के बिना सुखपूर्वक अपने दिन बिताने लगीं।

* * *

उदयन पिछली बार जब श्रावस्तीनगर गया था, तब वह एक राज्य से होकर गया था जहाँ पर उसने एक अंधे को दृष्टि लौटायी थी। इसे देख उस देश के राजा ने उदयन से अनुरोध किया था कि वह उसी राज्य में सदा केलिए रह जाय तो उसे सारी सुविधाएँ दी जाएँगी। इस वक़्त राजकुमारियों को जंगल में देख अपने दुर्ग में लानेवाला वही राजा था—प्रतापसिंह।

राजकुमारियों में अंगविकलता देख राजा प्रतापसिंह ने उसी वक़्त अपने मन में सोचा था कि उदयन ने जैसे उसे वादा किया था, उसके अनुसार वह ज़रूर लौट आएगा, उसके द्वारा इन तीनों कन्याओं को पुनः दृष्टि दिलाई जा सकती है। इस बात की याद आते ही राजा का चेहरा खिल उठा। इसके एक सप्ताह बाद उदयन राजा प्रतापसिंह के यहाँ आया भी। अचानक ही उदयन को आये देख राजा परम प्रसन्न हो उठा। उसने सोचा कि उदयन उसीके दरबार में रहने के लिए आया हुआ है।

"तुम आ गये? मैं तुम्हारा ही इंतज़ार कर रहा था। तुम ऐन वक़्त पर आ गये। क्या तुम्हारा काम सफल हो गया?" राजा ने एक साथ कई सवाल पूछे।

इन प्रश्नों के उत्तर में उदयन ने कहा—"महाराज! मेरा कार्य अभी तक सफल नहीं हुआ है। इसीलिए मैं आप की सहायता माँगने आया हूँ।"

"मेरी सहायता चाहिए? बिना किसी प्रकार के संकोच के पूछो। मैं अवश्य करूँगा।" राजा प्रतापसिंह ने उत्तर दिया।

इस पर उदयन ने अपने तथा अपने भाइयों का सारा वृत्तांत सुनाया और

यह भी बताया कि वह खोई हुई राजकुमारियों की खोज कर रहा है। अपने अंजन एवं भस्मों का प्रभाव भी बताया।

सारी बातें सुनकर राजा ने पूछा– "तो बताओ, मुझे क्या करना होगा?"

"आप अपने दरबारी चित्रकार को एक सप्ताह के लिए मेरे साथ भेज दीजिए। हम दोनों एक सप्ताह के अन्दर लौट आयेंगे।" उदयन ने कहा।

राजा ने चित्रकार को बुलवाकर उदयन का परिचय कराया। दूसरे दिन उदयन चित्रकार को साथ ले राक्षस के महल में पहुंचा। वहाँ पर उदयन ने चित्रकार पर भस्म छिड़काया और तब अपने ऊपर भी छिड़का लिया। दोनों पलक मारते अदृश्य हो गये। वे दिन भर सरोवर के किनारे रह गये, फिर दूसरे दिन मालव देश के लिए रवाना हो गये।

एक सप्ताह में उदयन तथा चित्रकार मालव राज्य के राजमहल में पहुँचे। चित्रकार ने अपने बनाये हुए सारे चित्र एक क़तार में सजाया। वह एक एक चित्र को परखते उदयन की ओर देखता रहा। थोड़ी देर बाद एक चित्र के पास पहुँचकर चित्रकार ने उदयन की ओर देखा और उस चित्र को उदयन के निकट खड़ा करके कहा–"वाह, बहुत बढ़िया है! यह वेष आप को बनाया जाय तो कोई आप को पहचान न सकेगा।"

"हाँ हाँ! तुम ठीक कहते हो!" उदयन ने प्रसन्नता पूर्वक उत्तर दिया। इसके बाद चित्रकार ने उदयन को राक्षस के अनुचरों में से एक की आकृति वाला वेष बनाया। उदयन ने दो-तीन दफ़े अपने रूप को आईने में देखा। – "वाह! यह भेष बहुत बढ़िया बना है।" यों उसने अपने मन में सोचा। दूसरे दिन राजा से विदा लेकर पुनः सरोवर की ओर चल पड़ा।

सरोवर के निकट पहुँचकर उदयन ने अपने भस्म को पोशाकों में ढूँढ़ा, मगर वह भस्म दिखाई नहीं दिया। वह घबरा या, फिर थोड़ी देर तक वह सोचता रहा कि क्या किया जाय, फिर हिम्मत बटोर कर संध्या तक वह झाड़ी की ओट में छिपा रहा।

संध्या हो गई। राक्षस के परिवार में से कुछ लोगों ने सरोवर के निकट आकर उन राक्षसों को छुट्टी दे दी। जो अब तक पहरे पर तैनात थे, छुट्टी पाकर वे राक्षस एक-एक करके भूगर्भ गृह में पहुँचे। अंतिम राक्षस जब उसमें प्रवेश करने लगा, तब उदयन भी युक्ति पूर्वक उसके साथ अन्दर चला गया।

उदयन मन ही मन इस बात पर शंकित था कि कहीं उसका प्रच्छन्न वेष प्रकट न हो जाय। मगर भाग्यवश ऐसी बात न हुई। कारण यह था कि उदयन का वेष देख राक्षसों ने सोचा कि वह भी उनमें से एक है।

उदयन धीरे-धीरे सारी सीढ़ियाँ उतर कर सिंहों की बगल में से गुजरा। उसका विचार था कि वह राक्षसों के दल में मिला हुआ है, अतः सिंह उसको पहचान न पायेंगे। मगर सिंहों ने उस नये व्यक्ति को तत्काल पहचान लिया और उस पर अचानक हमला करके मारने को हुए। मगर उदयन चीखकर नीचे गिर पड़ा।

उस दृश्य को देख बाक़ी लोग दौड़ आये और दोनों सिंहों को मार डाला। इसके बाद उदयन को साथ ले जाकर सब उसके चारों तरफ़ इकट्ठे हुए। तब सिंहों को मारनेवाले की तारीफ़ करते बोले–"ये सिंह हम्हीं लोगों को मारने चले हैं! इनका हौसला बढ़ चला है। तुमने बड़ा अच्छा किया कि इन्हें मार डाला।"

सब ने उदयन की परिचर्या की, उसके घावों पर पट्टियाँ बांध दीं। उदयन के थोड़ा स्वस्थ हो जाने पर बोले–"भाई, तुम चिंता मत करो; तुम्हारी सेवा करने केलिए हम लोग सदा तैयार रहेंगे। तुम्हें जो भी सहायता चाहें हम से माँग लो। तुम्हारे घावों के भरने तक तुम दो दिन यहीं रहकर आराम करो। तब तक तुम्हारे पहरे का काम भी हम देख लेंगे।"

"तब तो मेरी एक और मदद करते जाओ। मैं यहाँ से हिल-डुल नहीं सकता हूँ। मेरे खाने का भी प्रबंध करो, तुम्हारा भला होगा।" उदयन ने कहा।

पहरेदारों ने मान लिया। उदयन के लिए मांस व मदिरा ले आये, फिर उसके सोने का भी इंतज़ाम करके सब अपने काम पर चले गये।

सवेरा हुआ। राक्षस के परिचारक सरोवर के पास पहुँचे और वहाँ पर पहरा देने वालों को छुट्टी दी। इसके थोड़ी देर बाद उन लोगों ने आकर उदयन का अभिनंदन किया–"भाई, तुम तो क़िस्मतवर हो! इसलिए बाल-बाल बच गये।" रात भर वे लोग पहरा देते रहें, इसलिए थोड़ी ही देर में खुर्राटे लेते सो गये।

ठीक आधी रात के वक़्त राक्षस वहाँ पर आया। सिंहों को मरे पड़े देख वह क्रोध में आकर बोला–"किस दुष्ट ने इन्हें मार डाला है!" यों गरजते हुए वह उस जगह पहुँचा जहाँ पर उदयन लेटा हुआ था। (और है।)

सच्चा मित्र

हठी विक्रमार्क पेड़ के पास लौट आया। पेड़ से शव उतारकर कंधे पर डाल सदा की भाँति चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा–"राजन! इतनी मेहनत उठाकर विजय प्राप्त करने के बाद इस बात का ख्याल रखो कि चन्द्रक की भाँति तुम्हारी सफलता व्यर्थ न हो जाए। श्रम को भुलाने के लिए मैं तुम्हें रुद्रक की कहानी सुनाता हूँ।"

बेताल यों कहने लगा: प्राचीन काल में सत्राजित नामक एक यक्ष राजा था। तेजोवती उसकी पुत्री थी। तेजोवती अनुपम रूपवती थी। दो यक्ष कुमार सत्राजित की निशि-दिन सेवा किया करते थे। वे रुद्रक तथा चन्द्रक थे।

रुद्रक के प्रति सत्राजित का विशेष स्नेह था। मगर रुद्रक तेजोवती के प्रति

बेताल कथाएँ

आकृष्ट था, इसी कारण वह राजा सत्राजित का विशेष ध्यान रखता था। रुद्रक ने हृदय से तेजोवती को चाहा, लेकिन वह सुंदर न था, और न बड़ा पराक्रमी ही था। ये दोनों गुण चन्द्रक में थे। सौंदर्य के प्रति अनुरक्त तेजोवती चन्द्रक को चाहती थी। चंन्द्रक स्वभाव से ही राजा सत्राजित के प्रति श्रद्धा व भक्ति रखता था, इस कारण वह दिलोजान से राजा की सेवा करता था। चन्द्रक तेजोवती के मन की बात जानता था, इसलिए वह रुद्रक के प्रति सहानुभूति रखता था कि बेचारे रुद्रक को तेजोवती प्राप्त न होगी।

सत्राजित जब राजकुमारी के विवाह की बात सोचने लगा तब रुद्रक ने राजा के सामने अपनी इच्छा प्रकट की। इस पर सत्राजित प्रसन्न हुआ और उसने तेजोवती को सलाह दी कि वह रुद्रक के साथ विवाह करे।

रुद्रक के साथ तेजोवती विवाह करना नहीं चाहती थी, इसलिए उसने अपने पिता से कहा–"पिताजी! मेरे साथ जो विवाह करना चाहते हैं उनकी मैं परीक्षा लेना चाहती हूँ।"

"तुम कैसी परीक्षा लेना चाहती हो?" राजा ने पूछा।

"गंधर्व वन में एक सरोवर है। उसमें स्वर्ण कमल भरे हुए हैं। उनके रस का लेपन करनेवाले व्यक्ति न केवल समस्त प्रकार की व्यधियों से मुक्त हो जाते हैं, बल्कि गंधर्वों के समान संदरता भी प्राप्त करते हैं। जो व्यक्ति गंधर्वों को पराजित कर स्वर्ण कमल लायेगा, उसी के साथ मैं विवाह करूँगी।" तेजोवती ने कहा।

राजा सत्राजित ने अपने दो अनुचरों को बुलाकर उस परीक्षा में भाग लेने का आदेश दिया। इसपर रुद्रक तथा चन्द्रक दोनों गंधर्व वन की ओर चल पड़े। परंतु साहसी चन्द्रक निकट के रास्ते

से शीघ्र गंधर्व वन पहुंचा। वहाँ के सरोवर में स्वर्ण कमलों को देख एक कमल को चुनने के ख्याल से पानी में उतर पड़ा। दूसरे ही क्षण अदृश्य रूप में सिंह के रूप में स्थित एक गंधर्व गरजकर चन्द्रक पर टूट पड़ा। चन्द्रक ने भाँप लिया कि वह सच्चा सिंह नहीं है, उसने उसके कंठ को दोनों हाथों से कसकर दबाया। दम घुटने के कारण गंधर्व छटपटाया। असली रूप धारणकर उसने चन्द्रक से प्रार्थना की कि उसको प्राणों के सांथ छोड़ दे।

चन्द्रक ने अपने आने का कारण बताया। इस पर गंधर्व ने सरोवर से एक स्वर्ण कमल तोड़कर चन्द्रक को दिया। तब तक अंधेरा हो चला था, इसलिए चन्द्रक उस रात को समीप की एक गुफ़ा में रह गया।

अर्द्ध रात्रि के समय चन्द्रक ने सिंह का गर्जन सुना। चन्द्रक तेजी के साथ सरोवर के निकट पहुंचा तो देखता क्या है, रुद्रक घायल हो कराह रहा है।

चन्द्रक रुद्रक को अपनी गुफा में ले आया। स्वर्ण कमल के रस को निचोड़ कर उसके शरीर पर लेपन किया। दूसरे ही क्षण रुद्रक को गंधर्वों की अद्भुत सुंदरता प्राप्त हुई। रुद्रक ने चन्द्रक के प्रति कृतज्ञता प्रकट की। इसके बाद दोनों स्वर्ण कमल लिये बिना ही राज महल को लौट आये। फिर भी तेजोवती ने अपने पिता की इच्छा के अनुसार रुद्रक के साथ विवाह किया।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा— "राजन, सौंदर्य के प्रति अनुरक्त तेजोवती का अंत में रुद्रक के साथ विवाह करने में कोई आश्चर्य की बात नहीं है। मगर चन्द्रक ने जो विजय प्राप्त की, उसे रुद्रक को क्यों प्रदान की? दोनों तेजोवती की परीक्षा के उम्मेदवार थे न? वास्तव में तेजोवती ने अपने पिता से चन्द्रक के साथ विवाह करने

की अपनी इच्छा न बताकर प्रतियोगिता क्यों रखी? इन संदेहों का समाधान जानते हुए भी न दोगे तो तुम्हारा सिर टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा।"

इस पर विक्रमार्क ने यों उत्तर दिया– "सत्राजित से रुद्रक ने ही तेजोवती की माँग की, न कि चन्द्रक ने। यदि सत्राजित ने तेजोवती से यह कहा होता कि उन दोनों में से किसी एक के साथ विवाह करो, ऐसी हालत में तेजोवती ने चन्द्रक का ही चुनाव किया होता। जो व्यक्ति तेजोवती के साथ विवाह करने की माँग नहीं करता, उसके साथ तेजोवती कैसे विवाह करने की इच्छा प्रकट करती? इसीलिए तेजोवती ने प्रतियोगिता चलाकर चन्द्रक को भी स्वयंवर में भाग लेने को बाध्य किया। वह जानती थी कि उस प्रतियोगिता में रुद्रक हार जाएगा और चन्द्रक विजयी होगा। इसी ख्याल से तेजोवती यह चाल चली कि स्वर्ण कमल प्राप्त कर चन्द्रक और सुंदर बन जाएगा और उसको अपना पति बना सकेगी। मगर उसकी चाल को विफल बनानेवाला व्यक्ति स्वयं चन्द्रक ही था। चन्द्रक सत्राजित की आज्ञा का पालन करने के लिए प्रतियोगिता का उम्मेदवार बना, न कि तेजोवती के वास्ते। वह रुद्रक के प्रति ईर्ष्या या द्वेष नहीं रखता था। उल्टे वह रुद्रक के प्रति अगाध सहानुभूति रखता था। वह यह भी जानता था कि रुद्रक तेजोवती को कितना प्यार करता है! रुद्रक की क़िस्मत को अजमाने के वास्ते ही चन्द्रक उस दिन रात को शीघ्र लौटे बिना गुफा में उसका इंतजार करता रहा। इसलिए हम यह नहीं कह सकते कि चन्द्रक ने जो विजय प्राप्त की उसे त्याग दी है, उसने उस विजय का सदुपयोग किया।"

इस प्रकार राजा के मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

ईर्ष्या

बहुत दिन पहले की बात है। रामापुर में खिलौने गढ़नेवाला एक मशहूर शिल्पी था। उसके रामदत्त तथा सोमदत्त नामक दो पुत्र थे। जब वे दोनों बड़े हुए, तब उनके पिता का देहांत हो गया। रामदत्त भी अपने पिता के समान खिलौने बनाने में कुशल था, इसलिए अपने पिता की खिलौनों की दूकान को वह खुद चलाने लगा।

दूसरा पुत्र सोमदत्त शिक्षा में बड़ी अभिरुचि रखता था, इसलिए उसने पढ़ाई में अपना मन लगाया। अपने गाँव में एक गुरु के यहाँ शिक्षा समाप्त की। तब बड़े भाई रामदत्त ने सोमदत्त को मदुरा नगर में पंडित जगन्नाथ के यहाँ भेजा।

पंडित जगन्नाथ के यहाँ अनेक विद्यार्थी पढ़ते थे। फिर भी सोमदत्त ने यह ख्याति प्राप्त की कि सभी विद्यार्थियों में वही ज्यादा बुद्धिमान है। इस पर सोमदत्त का अहंकार बढ़ गया।

उन्हीं दिनों में पंडित जगन्नाथ के यहाँ आनंद नामक एक और शिष्य आ पहुँचा। आनंद न केवल असाधारण बुद्धिमत्ता रखता था बल्कि वह स्वभाव से भी सब के प्रिय बन गया। उसकी अक्लमंदी पर सब लोग आश्चर्य चकित थे, और उसका विशेष आदर भी करते थे।

आनंद को सब प्रकार से अपने मे बढ़ा-चढ़ा देख सोमदत्त उसके प्रति ईर्ष्या करने लगा। मगर वह अपनी ईर्ष्या को प्रकट किये बिना आनंद के साथ अच्छा व्यवहार करने लगा।

एक दिन पंडित जगन्नाथ के सभी शिष्य समिधाएँ लाने जंगल में चले गये। सोमदत्त बड़े स्नेह के साथ आनंद के कंधे पर हाथ डालकर स्नेह भरी बातें करते उसको अन्य

विमल मल्होत्रा

सोमदत्त ने सारी बातें अपने भाई को कह सुनाई। आखिर वह रो पड़ा। सारी बातें सुनकर रामदत्त ने सोमदत्त को सांत्वना दी।

थोड़े दिन बीत गये। कहीं से कोई खिलौनेवाला शिल्पी रामापुर में आया। उसने रामदत्त की दूकान के सामने खिलौनों की अपनी दूकान खोल दी। नई चीज़ सबको प्यारी लगती है, इसलिए सभी लोग उसी दूकान से खिलौने ख़रीदने लगे। सोमदत्त ने अपने मन में सोचा कि सच्ची कारीगरी का पता धीरे-धीरे लग जाएगा।

शिष्यों से अलग ले गया। एक निर्जन प्रदेश में आनंद को गिराकर सोमदत्त ने एक बड़ा पत्थर उठाया और कहा—"आज से मुझे तुम्हारा पिंड छूट जाएगा।" यों कहते वह आनंद का सिर फोड़ने को हुआ।

इतने में कुछ विद्यार्थी उस ओर आ निकले। वे चिल्ला उठे—"ठहर जाओ, यह तुम क्या करने जा रहे हो?"

सोमदत्त घबरा गया। पत्थर फेंक कर भाग खड़ा हुआ।

उदास चेहरा लिये घर लौटे अपने छोटे भाई सोमदत्त को देख रामदत्त ने पूछा—"भैया, उदास क्यों हो? क्या तुम्हारी पढ़ाई समाप्त हो गई?"

लेकिन सोमदत्त ने कुछ लोगों के मुंह से सुना कि उसके भाई के खिलौने अच्छे नहीं हैं। इस पर उसे लगा कि नया व्यक्ति खिलौने बनाने में कुशल हो सकता है, पर अपने भाई के खिलौनों का अच्छा न होना असंभव बात है।

एक दिन सोमदत्त अपने भाई की दूकान की ओर चल पड़ा। रास्ते में उसे एक व्यक्ति दिखाई पड़ा जो खिलौने ख़रीदकर जा रहा था और उन खिलौनों पर फूला न समा रहा था।

सोमदत्त ने पूछा—"तुमने ये खिलौने कहाँ से ख़रीदे?" "नये दूकानदार से" उस व्यक्ति ने जवाब दिया।

सोमदत्त ने उन खिलौनों को हाथ में लेकर देखा तो उसे लगा कि वे खिलौने बिलकुल अपने भाई के खिलौनों जैसे ही हैं। पर उसकी समझ में न आया कि लोग नये दूकानदार से खिलौने खरीदने को क्यों लालायित हो रहे हैं।

सोमदत्त ने दूकान पहुँचकर देखा कि उसका भाई रामदत्त एक खिलौना बना रहा है। उसके हाथ तो काम कर रहे थे, पर उसकी आँखें सामने की दूकान से खिलौने खरीदने वालों पर जमी हैं। उसे लगा कि उसके भाई का मन खिलौने बनाने में केन्द्रित नहीं है। सोमदत्त ने रामदत्त की हालत जान ली।

रामदत्त ने सिर उठाकर सोमदत्त की ओर देखा और आवेश में आकर पूछा– "क्यों रे, क्या तुम यह सोचकर चिंता कर रहे हो कि कोई हमारी दूकान में खिलौने खरीदने नहीं आता है? यह हालत ज्यादा दिन तक चलने की नहीं, गाँव के मुखिये की मुठ्ठी गरम करके उस नये दूकानदार को मैं गाँव से ही खदेड़वा दूंगा। इसके बाद लोग झक मारकर हमारी दूकान से ही खिलौने खरीद लेंगे।"

सोमदत्त ने भांप लिया कि नये खिलौनेवाले की स्पर्धा की वजह से उसके भाई का मन विकल हो गया है, इसीलिए वह खिलौने ठीक से बना

नहीं पा रहा है। उसी क्षण उसे लगा कि किसीने उसके गाल पर चपत लगाई है, तत्काल वह घर लौट आया और उसी दिन मदुरा के लिए चल पड़ा।

सोमदत्त ने गुरुकुल में जाकर जगन्नाथ पंडित के चरणों में गिरकर क्षमा माँग ली, इसके बाद आनंद से भी क्षमा माँगकर अपनी पढ़ाई जारी की। आनंद सोमदत्त के प्रति नाराज़ न था। इसलिए वे दोनों जल्द ही गहरे दोस्त बन गये। अंत में सोमदत्त अपनी शिक्षा समाप्त कर पूर्ण पंडित बना और अपने गाँव लौट आया।

अपने छोटे भाई को पंडित बने लौटे देख रामदत्त बड़ा प्रसन्न हुआ और उसने पूछा—"तुम बीच में पढ़ाई छोड़कर घर लौट आये थे, फिर क्यों वापस चले गये?"

सोमदत्त ने कहा—"मैंने एक नग्न सत्य को जान लिया है, हम से ज्यादा प्रवीण व्यक्ति दिखाई देता है तो उसके प्रति हमारे मन में ईर्ष्या का पैदा हो जाना सहज है। मगर वह ईर्ष्या यदि लगन में परिवर्तित हो जाती है तो हम अपनी उन्नति कर सकते हैं। यदि वह ईर्ष्या क्रोध में बदल जाती है तो हम अपने प्रतिद्वन्द्वी का विनाश चाहते हैं जिससे हमारा भी सर्वनाश हो जाता है। मैं आनंद की बुद्धिमत्ता देख ईर्ष्या से भर उठा। पर मैंने जो भूल की, उसे तुम्हारे आचरण के द्वारा पहचान ली। तुम्हारे प्रतिस्पर्धी के खिलौने ऊँची कला के नहीं हैं, तुम अगर चाहते तो उनसे बढ़िया खिलौने बना सकते थे।"

ये बातें सुन रामदत्त मुस्कुराया और बोला—"तुम सच बताते हो! तुम को इस सत्य का ज्ञान कराने के लिए ही मैंने यह नाटक रचा है। मेरा प्रतिस्पर्धी और कोई नहीं है, बल्कि पड़ोसी गाँव का मेरा मित्र ही है। उसने मेरे ही खिलौने बेचे थे। यह नाटक तुम्हारे लिए उपयोगी बन पड़ा है।"

१६५. प्राचीन रोम के नगर

ई. सन् ७९ में जब वेसूवियस नामक अग्नि पर्वत फूट पड़ा तब पांपे तथा हेर्क्युलेनियम नामक दो नगर पृथ्वी में समा गये। उन नगरों की बुरी हालत का परिचय उस समय के लोगों को था ही। पर १८ वीं शताब्दी तक उन नगरों का पता कोई जानता न था। १७१० में जब एक किसान एक कुआँ खुदवा रहा था, तब हेर्क्युलेनियम नगर का पता चला। काल क्रम की खुदाई में दो नगर पूर्ण रूप से प्रकट हुए। आश्चर्य की बात तो यह है कि वे नगर तथा उनके शिल्प ज्यों के त्यों सुरक्षित हैं।

हेर्क्युलेनियम में सर्व प्रथम जो महल प्रकट हुआ, वह जूलियस सीजर के ससुर का था। वह महल अत्यंत महत्वपूर्ण है। उपर्युक्त चित्र में हमें पांपे नगर का जूपिटर देवालय दिखाई दे रहा है। उसके पीछे भाप निकालने वाले वेसूवियस अग्नि पर्वत को देख सकते हैं।
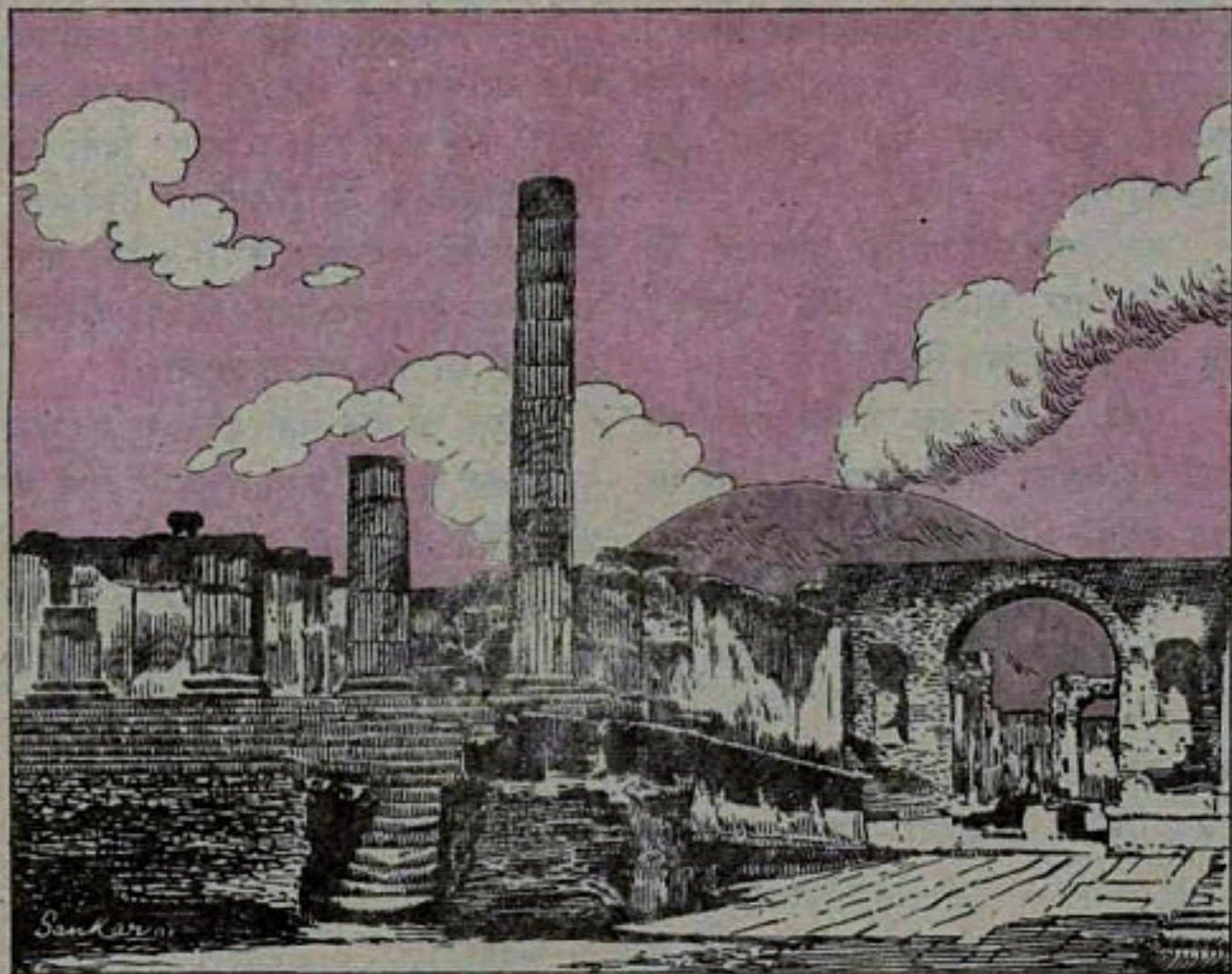
नींबू की करामात

"तुम क्या कालीमाता के प्रिय पुत्र रघु के साथ युद्ध करोगे?" डाकू रघु तलवार चमकाते अजित नामक ग्रामीण युवक की पीठ थपथपाकर बोला।

अजित के हाथ-पैर जंगली लताओं से कसकर बांधे गये थे, इसलिए वह मौन रह गया।

"इस घमंडी का सिर तलवार की एक ही वार से काट डालूं भैया?" रघु का एक अनुचर चिल्ला उठा।

"नहीं, नहीं! भूल से ही ऐसा मत करो। अगली अमावास्या शनिवार के दिन इसकी बलि चढ़ाने के लिए काली माता ने स्वयं इसको यहां पर भेजा है। यह युवक जाति का ब्राह्मण भी है। जनेऊ पहने हुए है, ऐसे व्यक्ति की बलि चढ़ाने पर कालीमाई बड़ी प्रसन्न होगी।" यों नामी डाकू रघु सचेत कर वहां से चला गया। इसके बाद अजित को एक कुटी में बंद कर रघु के अनुचर पहरा देने लगे।

असल में बात यह थी कि अजित थोड़े यात्रियों के साथ जगन्नाथपुरी की यात्रा पर चल पड़ा। उन दिनों में रेल गाड़ियां न थीं, इसलिए तीर्थयात्री दल बांधकर यात्रा किया करते थे। रास्ते बड़े ही खतरनाक होते थे, खूंख्वार जानवरों का डर बना रहता था।

अजित का दल बड़ी दूर तक सकुशल यात्रा कर पाया, जगन्नाथपुरी पहुंचने में उन्हें तीन दिन की यात्रा और करनी थी। ऐसी हालत में एक दिन दुपहर को नामी डाकू तथा उसके अनुचरों ने जंगली रास्ते में यात्रियों पर हमला किया।

अजित लाठी चलाने में प्रवीण था। वह लाठी लेकर डाकुओं का सामना

ए. सी. सरकार, जादूगर

करने लगा। लाठी चलाते हुए तलवार तथा भाले चलानेवाले छे डाकुओं का उसने अकेले ही सामना किया। वह डाकुओं से लड़ ही रहा था, तभी अन्य यात्री अपने प्राण बचाकर वहाँ से सुरक्षित स्थानों पर चले गये।

अजित अकेले ही घंटा भर लड़ता रहा। इसके बाद वह थक गया, आखिर डाकुओं ने उसको बन्दी बनाया। डाकू अजित को अपने नेता के पास ले गये।

अजित की समझ में न आया कि उसका हाल क्या होगा। मगर रघु की बातों से उसे स्पष्ट हुआ कि उसकी मृत्यु निश्चित है। डाकू उसे काली माता के चरणों पर बलि चढ़ायेंगे। कालीमाता चोर-डाकुओं की देवी है। फिर भी अजित को इस बात का संतोष था कि उसके सहयात्री प्राणों से बचकर निकल गये हैं।

अजित ने सोने की कोशिश की, पर उसे नींद न आई। इस आशा से वह आधी रात तक जागता रहा कि शायद बच निकलने का कोई रास्ता सूझे! उस कुटी में केवल एक खिड़की थी जिस में लोहे के सींकचे लगे थे। वह कोशिश करके सींकचों को निकाल न पाया। खिड़की में से बाहर देखा तो

धुंधली चाँदनी में कुटी के चारों कोनों पर चार डाकू भाले पकड़े पहरा देते हुए दिखाई दिये। उसे लगा कि मौत से बचना मुश्किल है।

सवेरा हो गया। अजित के मन में एक नई आशा जागृत हो उठी। खिड़की में से बाहर देखा। खिड़की से लगकर फूलों का बगीचा था। उसमें रक्तिम वर्ण के जपा पुष्प दिखाई पड़े। बायीं ओर एक नींबू का पेड़ है। पेड़ की डालों में नींबू लटक रहे थे। एक डाल खिड़की को छू रही थी।

अजित ने सोचा कि यदि उसकी युक्ति चल निकली तो प्राणों के साथ

बच सकता है। वह थोड़ा-बहुत इंद्रजाल जानता था। इसलिए उसका उत्साह उमड़ पड़ा। अजित का पूफा इंद्रजाल में प्रवीण था। वह जड़ी-बूटियों तथा रसायनों के साथ अनेक अद्भुत कार्य किया करता था। उसके साथ कई वर्ष बिताने के कारण वह भी थोड़ा-बहुत इंद्रजाल सीख गया था।

अजित की निराशा जाती रही। उसमें जीने की इच्छा प्रबल हो उठी। इसके वास्ते उसने एक योजना बनाई।

शनिवार निकट आ रहा है। डाकू देवी की पूजा की तैयारियाँ कर रहे हैं।

शनिवार सवेरे डाकूओं का नेता रघु अजित को देखने आया और बोला— "भाई, तुम्हारी हिम्मत तारीफ़ के क़ाबिल है। तुम्हारे पैंतरें बदलने की कला अनुपम है। इस कला में कोई भी तुम्हारे साथ स्पर्धा नहीं कर सकता। अगर तुम जिंदा रहते तो हमारे लिए उपयोगी होते, लेकिन तुम्हारा मरना ज़रूरी है। यह तो काली माता की आज्ञा है। वह तुम्हारा रक्त चाहती है, आज रात को कालीमाता के सामने तुम्हारा सर काट डाला जाएगा। काली माता तुम्हें बलि लेने के वास्ते ही तुमको यहाँ पर बुलवा लाई है।"

इस पर उद्रेक में आकर अजित बोला— "रघु! यह तो सफ़ेद झूठ है। तुम नहीं जानते कि मैं कालीमाता का बड़ा भक्त हूँ। उसने मुझे यहाँ पर मेरे प्राण लेने के लिए नहीं बुलवाया है। तुम्हारे भीतर जो क्रूरता भरी है, उसका अंत करने के लिए। उसी क्रूरता ने तुम्हें इस प्रकार निर्दयता के साथ डाकू बनाया है। मेरी आखों में देखो, तुम्हें क्या दिखाई देता है?"

रघु ठठाकर हंस पड़ा और बोला— "तुम जो बकते हो, इसे देख तुरंत मैंने तुम्हारी जीभ काट डाली होती,

मगर तब तुम विकलांग बन जाओगे और कालीमाता की बलि चढ़ाने योग्य न रह जाओगे।"

"रघु! मैं बकवास नहीं कर रहा हूँ। तुम्हें संभलने के लिए अब भी वक़्त बचा है। तुम अपनी क्रूरता त्याग दो। दूसरों को मत लूटो। पाप के रास्ते को छोड़ दो। मैं तुम्हें फिर समझा देता हूँ। मैं कालीमाता का भक्त हूँ। इसलिए उसने मुझे स्वप्न में दर्शन देकर तुम्हें सुधारने का आदेश दिया है। तुम्हारे बारे में तथा तुम्हारी बलियों से भी वह बिलकुल संतुष्ट नहीं है।" अजित ने समझाया।

"क्या तुम यह साबित कर सकोगे कि तुम कालीमाता के भक्त हो?" रघु ने पूछा।

"ज़रूर साबित करूँगा।" अजित ने कहा। "कैसे?" रघु ने पूछा।

"कोई एक मामूली चीज़ चाहिए।" यों कहते अजित ने कुटी की चारों तरफ़ नज़र दौड़ाई। एक कोने में मसल कर गिराये गये एक सफेद काग़ज़ को उठाया। उस काग़ज़ के दो टुकड़े किये, एक उसने रख लिया, दूसरा टुकड़ा रघु के हाथ देकर बोला—"रघु, तुम मुझे अपने देवालय में ले जाओ।"

अजित को लताओं से बाँधकर काली के देवालय में ले गये। उसके पीछे हथियार बंद पहरेदार थे।

अजित ने महा काली के समक्ष साष्टांग दण्डवत किया, फिर प्रार्थना की। इसके बाद बोला—"रघु! देवीजी के चरणों पर स्थित एक जपा पुष्प उठाओ। उसके दो टुकड़े करके एक तुम रख लो और दूसरा मुझे दे दो। मैंने तुम्हारे हाथ कागज़ का जो टुकड़ा दिया, उसे ज़मीन पर रखकर उसपर फूल मल दो। यदि मैं सचमुच काली माता का भक्त हूँ तो मेरे कागज़ पर लाल धब्बे और तुम्हारे कागज़ पर

नीले धब्बे उभर आयेंगे। जय महाकाली! अब शुरू करेंगे!"

दोनों ने अपने अपने कागज़ पर जपा पुष्प को मल दिया। अजित के कहे अनुसार उसके कागज़ पर लाल धब्बे तथा रघु के कागज़ पर नीले धब्बे निकल आये। उसे देख रघु के साथ वहाँ पर इकट्ठे सभी लोग आश्चर्य में आ गये।

"जय महाकाली!" अजित चिल्ला उठा।

सारे डाकू एक स्वर में बोल उठे— "जय महाकाली!" इसके बाद वे सब अजित के पैरों पर गिरकर बोले— "महात्मा! हमको क्षमा कर दो। हम लोग पापी हैं। हमारी रक्षा कीजिए!"

फिर क्या था, सबने मिलकर अजित के बंधन खोल दिये। उसकी सलाह पर डाकुओं ने लूटना त्याग दिया, जो कुछ इसके पहले लूटा था, उसे गरीबों में बाँट दिया। उस दिन से वे लोग जंगल में खेती करके अपना पेट पालने लगे।

जपा पुष्प तथा नींबू को देखते ही अजित को अपने फूफे का इन्द्रजाल याद हो आया। अजित के पास एक सफ़ेद कागज़ था, उस पर अपने पुरखों के नाम लिखकर पूरी जगन्नाथ में कर्मकांड कराने के ख्याल से उसने वह कागज़ अपने पास रख लिया था। उसने उस कागज को दो तहों में मोड़ दिया। एक नींबू काटकर उसके रस को आधे कागज़ पर मल दिया, उसे सुखाकर मसल दिया और कुटी के एक कोने में डाल दिया। उस इंद्रजाल की विशेषता यह है कि जपा पुष्प की पंखुड़ियों को साधारण कागज़ पर मलने पर नीले व काले रंग के धब्बे पड़ जाते हैं, उन्हीं पंखुड़ियों को यदि नींबू का रस मले हुए क़ागज़ पर मल दे तो लाल धब्बे पड़ जाते हैं।

इस प्रकार एक साधारण नींबू ने न केवल अजित के प्राण बचाये, बल्कि नामी डाकुओं को बुद्धिमान बना दिया।

कवच की परीक्षा

एक सैनिक का पिता कवच तैयार किया करता था। एक बार उसने बढ़िया कवच तैयार किया और उसे राजा को दिखाया।

राजा ने कहा–"कवच तो अच्छा है, लेकिन इसकी परीक्षा करनी है।" यों कहते उसे एक शिला को पहना दिया और उसपर तलवार तथा गदों का प्रहार कराया। कवच टूटकर टुकड़े-टुकड़े हो गया।

यह बात जब सैनिक को मालूम हुई, तब उसने अपने पिता से एक और कवच तैयार कराया; उसे राजा के पास ले गया। राजा उस कवच को फिर शिला को पहनाने लगा।

"महाराज! कवच की परीक्षा ऐसी नहीं होती।" यों कहते सैनिक ने वह कवच स्वयं धारण किया और राजा से उसकी परीक्षा लेने को कहा। राजा तलवार निकालकर उस पर टूट पड़ा, तब सैनिक भी झट से तलवार खींचकर लड़ने को तैयार हो गया।

इसे देख राजा को क्रोध आया। तब सैनिक ने राजा से कहा–"महाराज! मुझे क्षमा कर दीजिए! कवच तो शिलाएँ धारण नहीं करतीं; लड़नेवाले सैनिक धारण करते हैं। वे अपनी आत्मरक्षा करते हैं।"

सैनिक की बातों की सचाई जानकर राजा ने कवच का अच्छा मूल्य देकर खरीदा।

साधू की नसीहत

एक गाँव में राधा किशन और राम चरण नामक दो दोस्त थे। उन्हें अपना कहनेवाला कोई न था। दोनों बचपन से एक साथ एक ही घर में रहा करते थे। उन्हें कोई काम-वाम न था, पर जब मन लगता तब जंगल में चले जाते, लकड़ी काटकर बेच देते। उसीसे उनका गुजारा होता था। जब जंगल में जाने का मन न लगता तब किसी के बगीचे से कोई केले का घौद चुरा लाते, उसे बेचकर पेट भर लेते।

राधा किशन के पास अपने बापदादों के जमाने की एक चाँदी की थाली थी। रामचरण के पास एक पुरानी खाट थी। दोनों उस चाँदी की थाली में खाना खाते और उस खाट पर सो जाते।

बरसात के दिन थे। एक दिन ज़ोरों से पानी बरस रहा था। दोनों मित्र चाँदी की थाली में भोजन कर खाट पर बैठ गये। राधा किशन के हिस्से में थोड़ा खाना बच गया था। रामचरण के हिस्से में थोड़ी तरकारी बच गई थी। सुबह खाने के ख्याल से दोनों ने उन पर पत्तल ढक दिया।

राधा किशन अपनी हालत पर अफसोस ज़ाहिर करते बोला—"हम इस तरह कितने दिन गुजारेंगे। थोड़े दिन बाद अगर हमारी शादी होगी तो अपनी पत्नियों का पालन-पोषण कैसे करेंगे?"

इस पर रमाचरण ने कहा—"हमने अनेक कहानियाँ सुनी हैं कि ऐसी ही बरसात की रातों में कोई महानुभाव दर्वाजे पर दस्तक देते आ पहुँचा, आश्रय पाकर उन लोगों का उपकार किया है।

रमेश गुप्त

न मालूम क्यों, हमारे इस दरिद्र घर में कोई महानुभाव नहीं आते!"

"अरे भाई! चिंता करने से फ़ायदा ही क्या है? आधी रात होने को है। हम सो जायेंगे।" राधा किशन ने अपने मित्र से कहा।

इतने में किसी ने दर्वाजे पर दस्तक दिया। राधा किशन ने उठकर दर्वाजा खोला। बाहर गेरुए वस्त्र धारण किया हुआ एक बूढ़ा सर्दी में कांपते नज़र आया।

राधा किशन ने गुस्से में आकर डांटा–"तुम कौन हो? आधी रात के वक़्त आकर इस तरह दर्वाजा खटखटा रहे हो, मानो यह घर तुम्हारे बाप का बनाया हुआ है! जल्दी यहाँ से निकल जाओ।"

"मैं एक बूढ़ा साधु हूँ। भूख के मारे परेशान हूँ। आज रात को मुझे आश्रय दो।" साधू ने विनम्र स्वर में कहा।

यह बात सुनते ही रामचरण उठकर चला आया और बूढ़े का स्वागत करते बोला–"आइये महात्मा! आप के आगमन से हमारा घर पवित्र हो गया है। लेकिन इस जून हमारे यहाँ भोजन में एक तरकारी मात्र है।"

साधू ने वात्सल्य पूर्वक मुस्कुराते हुए कहा–"बेटा! भूखे को मिष्टान्न की क्या ज़रूरत है? तुम्हारा दिल अच्छा

है, बस इसी से हमें संतोष है।" यों कहते बूढ़ा सधू घर के अन्दर आया। तृप्ति के साथ खाना खाया।

इसके बाद साधू ने रामचरण से कहा–"बेटा, तुमने मेरे प्राण बचाये, तुम अपनी कोई चीज़ दिखाओ। उसको एक अद्भुत शक्ति देकर अपने रास्ते चला जाऊँगा।"

"महात्मा! यह खाट मेरी ही है।" रामचरण ने कहा।

साधू ने अपने हाथ के जल को खाट पर छिड़ककर कहा–"बेटा, अब तुम्हें कोई फ़िक्र नहीं है। तुम इस खाट पर लेटकर थोड़ी देर के लिए अपनी आँखें बंद कर लोगे तो जहाँ-जहाँ खज़ाने गड़े हैं, वे सब तुम्हें दिखाई देंगे। तुम सुखी रहो।"

ये बातें सुनने पर राधा किशन के मन में रामचरण के प्रति ईर्ष्या पैदा हो गई। झट वह बोला पड़ा–"साधू महाराज, यह तो अन्याय है। आपने तो मेरा बचाया हुआ खाना खाया। उसके हिस्से की तो सिर्फ़ तरकारी बची थी। इसलिए आपने जो अनुग्रह किया, उसमें से तीन हिस्से मुझे मिलने हैं। अलावा इसके खाट भी मेरी है। यह व्यक्ति लोभ में पड़कर खाट को अपनी बता रहा है।"

इस बात पर रामचरण गुस्से में आया और खाट को लेकर वे दोनों मित्र झगड़ पड़े।

साधू ने उन दोनों मित्रों को समझाया–"भाइयो, तुम दोनों का झगड़ना ठीक नहीं है। उस खाट पर तुम दोनों लेट जाओ, आँखें मूंद लो। जिस की आँखों को मेरा बताया हुआ खजाना दिखाई देगा, यह खाट उसीकी होगी।"

इस पर वे दोनों खाट पर लेट गये और आँखें मूंद लीं। बड़ी देर के बाद भी उन्हें कोई खजाना न मिला, आखिर ऊबकर दोनों ने आँखें खोल दीं। देखते क्या हैं, वहाँ पर न साधू है और न चाँदी की थाली ही।

सच्चा शिष्य

एक शिक्षक अपनी पाठशाला में विद्यार्थियों को भर्ती कर रहे थे। ख़्वाजा नसिरुद्दीन ने उसके पास जाकर पूछा–"साहब, मैं भी आप की पाठशाला में भर्ती होना चाहता हूँ।"

नसिरुद्दीन जैसे व्यक्ति के अपने शिष्य होते देख शिक्षक ने एक ही साथ प्रसन्नता एवं गर्व का अनुभव किया।

दूसरे दिन नसिरुद्दीन पाठशाला में गया। सभी विद्यार्थी फावड़े लेकर मिट्टी खोद रहे थे। शिक्षक अपने हाथ में छड़ी लेकर विद्यार्थियों के कार्य की निगरानी करते इधर-उधर घूम रहे थे। ख़्वाजा नसिरुद्दीन वहाँ पर पड़ी हुई एक लाठी लेकर शिक्षक का अनुकरण करते उनके पीछे बड़े-बड़े क़दम बढ़ाने लगा। इस पर शिक्षक ने नसिरुद्दीन से पूछा–"नसिरुद्दीन, तुम तो यहाँ पर पढ़ने आये हो, पर तुम और विद्यार्थियों की भांति काम क्यों नहीं करते?"

नसिरुद्दीन ने झट जवाब दिया–"गुरूजी! मैं आप से शिक्षा प्राप्त करने आया हूँ, आप के विद्यार्थियों से नहीं।"

बनिये की युक्ति

एक गाँव में भीखमदास नामक एक किसान था। एक वर्ष उसके खेत में धान की अच्छी फ़सल हुई। भीखमदास रोज रात को अपने खेत का पहरा देता था। एक दिन की रात को चार चोर भीखमदास के खेत में घुस आये। दो चोर जल्दी-जल्दी धान की बालें काटकर बोरों में भर रहे थे, बाक़ी दोनों हाथ में लाठी लिये भीखमदास के सिर और पैरों के पास खड़े हो गये।

भीखमदास ने चोरों को देखा, मगर वह अकेला कुछ न कर पाया। चिल्लाने से उसके प्राणों के लिए खतरा पैदा होगा, इसलिए वह आँखें मूंदे लेटा ही रहा। चोरों ने चार बोरे भर लिये और भाग खड़े हुए।

भीखमदास ने सुबह उठकर देखा, उसकी आधी फ़सल तबाह हो गई थी। यह खबर सारे गाँव में फैल गई। गाँववालों को भीखमदास पर रहम आई। सब ने यही सोचा-"वे क़मबख्त चोर बेचारे गरीब भीखमदास के खेत को ही लूट ले गये।" मगर चोरों को कैसे पता चलता कि उस खेत का मालिक गरीब है या अमीर?

गाँव के बुजुर्गों ने मिलकर चोरों से बचने के उपाय पर विचार किया। उनके सामने यह समस्या पैदा हो गई कि आज भीखमदास के खेत को लूटा तो कल किसी और का खेत भी लूट लेंगे; पर चोरों को रोकने का उपाय क्या है?

उसी गाँव में एक बनिया था। वह गरीब था, लेकिन बड़ा ही अक़्लमंद था। उसने बुजुर्गों को समझाया-"आप लोग बेफ़िक्र रहिये। मुझे चार दिन

कविता त्रिपाठी

की मोहलत दीजिएगा तो में चोरों को आप के सामने हाजिर करूँगा।"

"भाई, तुम चोरों को पकड़वा दोगे तो हम सब चन्दा वसूल कर के उस धन से तुम्हारे लिए एक दूकान खुलवा देंगे।" बुजुर्गों ने एक स्वर में कहा।

मगर बनिये ने किसी से यह नहीं बताया कि वह क्या करने जा रहा है!

भीखमदास के खेत को लूटनेवाले चोर अपनी बस्ती में चले गये। यह खबर उस बस्ती के और चोरों के कानों में पड़ गई। दूसरे दिन उसी गाँव के पाँच चोर खेतों की ओर चल पड़े।

अपने एक हाथ में हँसिया लिये, दूसरे हाथ में दो खाली बोरे थामे बनिया चोरों का इंतजार करते हुए एक खेत के पास खड़ा हुआ था। चोरों को दूर से देखकर वह धान की बालें काटने का अभिनय करने लगा।

बनिये को बालें काटते देख चोर खुश हुए। उन लोगों ने सोचा कि उनकी मदद के लिए एक और चोर मिल गया है। बनिये के निकट जाकर पूछा—"तुम किस गाँव के रहनेवाले हो?"

"मैं अमुक गाँव का आदमी हूँ। लेकिन तुम लोग किस गाँव के हो?" चोरों ने अपने गाँव का परिचय दिया।

"अब जल्दी करो, वरना हम पकड़े जायेंगे!" बनिये ने चोरों से कहा।

चोर जल्दी-जल्दी बालें काटकर बोरे भरने लगे। चोरों में से एक ने बनिये से पूछा–"सुनो भाई, इस खेत का पहरा कोई नहीं दे रहा है। इसका मालिक कैसा लापरवाह है?"

"इस खेत का मालिक बहुत बड़ा अमीर है। उसके कोई संतान भी नहीं है। घर में सोना भरा पड़ा है। वह अपनी औरत को अकेले छोड़ खेत का पहरा देने नहीं आता। मैं अकेला कुछ कर नहीं पाता हूं, वरना उसके घर का सारा सोना कभी हड़प लिया होता।" बनिये ने चोरों से कहा।

"भाई, तुम 'हां' कह दो, बस! जिस दिन तुम कहोगे उसी दिन हम सब आ धमकेंगे!" चोरों ने कहा।

बनिये ने अमुक दिन आने को कहा। चोर प्रसन्न हो कर चले गये।

बनिये के कहे मुताबिक़ सभी चोर एक दिन की रात को निश्चित स्थान पर मिले। बनिया उन्हें अपने साथ एक घर के सामने ले गया। इसके पूर्व ही बनिये ने उस घर के मालिक से मिलकर एक योजना बनाई थी, उसके अनुसार उसने दर्वाजा खटखटाया।

घर के मालिक ने आकर दर्वाजा खोल दिया। चोरों ने उसके मुंह में कपड़े ठूंस दिये ताकि वह चिल्लाये नहीं। इसके बाद उसके हाथ-पैर बांधकर एक जगह डाल दिया। इतने में भीतर से एक औरत आई। बनिया धमकानेवाले स्वर में बोला–"खबरदार! तुम चिल्लाओगी तो तुम्हारा काम तमाम करेंगे।" फिर चोरों से बोला–"चलो अंदर! सारी संपत्ति लूट लाओ।"

जब सभी चोर एक कमरे के अंदर चले गये, तब बनिये ने दर्वाजे बंद किये। इसके बाद बनिया सारे गांववालों को बुला लाया। गांववालों ने चोरों को पकड़ लिया और उनके हाथ-पैर बांध दिये। सवेरा होते ही चोरों को कोत्वाल के हाथ सौंप दिया और बनिये के लिए एक दूकान खुलवा दी।

सौतों का झगड़ा

जीवनलाल नामक एक व्यापारी के दो पत्नियाँ थीं। वे दोनों बात-बात पर दिन-रात झगड़ती थीं। साथ ही स्पर्धा लगा कर बेकार रुपये खर्च करतीं जिस से जीवनलाल एक दम परेशान हो उठा। उसने अपनी यह विपदा अपने घनिष्ट मित्र प्यारेलाल को सुनाई।

प्यारेलाल एक दिन अपने परिवार के साथ जमीन्दार के वेष में जीवनलाल के घर आया और बोला–"मैंने अपनी बेटी का विवाह दो बार रचा तो दोनों बार विवाह वेदी पर ही वर मर गये। ज्योतिषियों ने बताया है कि दो पत्नीवाले के साथ इसका विवाह करे तो वह सदा सौभाग्यवती बनी रहेगी। इसलिए आप मेरी कन्या के साथ विवाह करें तों मेरी सारी संपत्ति आप की हो जाएगी।"

जीवनलाल ने यह कहकर प्यारेलाल को भेज दिया कि दो-चार दिनों में अपना निर्णय सूचित करूँगा। इसके बाद जीवनलाल की दोनों पत्नियों ने सोचा कि जीवनलाल की होनेवाली तीसरी पत्नी धनी परिवार की है। इसलिए उनकी पूछ न होगी, यह सोचकर दोनों स्पर्धा लगाकर जीवनलाल की सेवा करने लगीं।

सच्ची पहचान

एक गाँव में एक गरीब किसान था। वह दूसरों के खेतों में मजूरी करते अपना पेट पालता, जब कोई काम न होता तब अपनी भैंसों का दूध बेचा करता। उस किसान के चन्दन और कन्दन नामक दो लड़के थे। चन्दन को एक बार उसके पिता ने डाँटा तो वह रूट गया और बचपन में ही घर छोड़कर कहीं चला गया।

किसान बूढ़ा हो गया था। मरते वक़्त उसने अपने दूसरे बेटे कंदन को बुलाकर अपनी अंतिम इच्छा बताई– "बेटा! हमारी जायदाद कुल मिलाकर ये ही दस भैंसें हैं। अगर जब भी तुम्हारा बड़ा भाई चन्दन घर लौट आएगा तो तुम पाँच भैंसें उसे दे दो। चन्दन की नाक पर आध इंच लंबा दाग होगा। यही उसकी खास पहचान है।"

अपने बाप के मरने के बाद कंदन अपने बड़े भाई चन्दन का इंतज़ार करते दिन गुजारने लगा। यदि कोई नया आदमी दिखाई देता तो कंदन उसकी नाक को परखकर देखता। कोई उससे पूछ लेता तो वह यही जवाब देता– "वैसे बात खास नहीं है। बारह साल पहले मेरा बड़ा भाई घर से भाग गया है। उसकी नाक पर आध इंच लंबा दाग है। यदि वह दिखाई देगा तो उसे मुझे पाँच भैंसें सौंपनी है।"

"अरे पगले! बारह साल पहले जो भाग गया है, वह अब लौटकर क्यों आएगा? यदि लौट आएगा भी तो तुम्हें अपनी भैंसें क्यों सौंप देनी है? तुम पहले से ही गरीब हो, उल्टे और गरीब क्यों बनना चाहते हो? एक-दो व्यक्ति ने कंदन को सलाह भी दी।

सीमा सेठी

एक दिन कंदन खेत पर काम करने जा रहा था। उसे अपने घर के निकट एक भिखारी जैसा आदमी दिखाई दिया। उसके कपड़ों पर धूल जमी थी और वह कराह रहा था। कंदन को उस पर दया आई। उसने पूछा–"तुम कौन हो? तुम्हें क्या चाहिए?"

"भाई, मैं तीन दिनों से भूखा हूँ। बहुत दूर से पैदल चला आया हूँ, इसलिए थक गया हूं। मेरी आँखें चकरा रही हैं, इस वजह से गिर पड़ा।" उस व्यक्ति ने उत्तर दिया।

कंदन ने उस व्यक्ति की नाक पर दाग़ देखा। झट उसने पूछा–"तुम्हारा नाम क्या है?" इस पर उस व्यक्ति ने जवाब दिया–"मैं कई साल पहले घर से भाग गया था। आखिर कोई रास्ता न पाकर भीख मांगते हुए अपने पिता के पास चल पड़ा।"

"भैया! मैं तुम्हारा छोटा भाई कंदन हूँ। पिताजी मर गये हैं। उन्हों ने मरते वक़्त मुझे बताया है कि तुम्हारे लौटने पर तुम्हें पाँच भैंसें दे दूं।" इन शब्दों के साथ कंदन उसे अपना घर ले गया और उसकी सेवा की।

मगर दूसरे दिन कंदन ने जागकर देखा, वह व्यक्ति कहीं दिखाई नहीं दिया। झोंपड़ी में से पाँच भैंसें भी गायब थीं।

कंदन ने सोचा कि शायद उसका बड़ा भाई उसके साथ रहना नहीं चाहता है, इसलिए घर छोड़कर चला गया है। शायद वह मेरा भाई नहीं, चोर होगा!

थोड़े दिन और बीत गये। एक दिन कंदन के घर के आगे एक गाड़ी आ रुकी। उसमें से एक अमीर जैसा व्यक्ति उतरा। गाड़ीवाले ने कुछ पेटियाँ, फलों की एक टोकरी और अन्य सामान भी लाकर चबूतरे पर रख दिये।

कंदन ने आश्चर्य में आकर उस व्यक्ति से पूछा–"आप कौन हैं?"

"अरे तुम तो कंदन हो न? मैं चन्दन हूँ। पिताजी कुशल हैं न?" अमीर ने कंदन से पूछा।

कंदन ने विस्मय में आकर उस व्यक्ति की नाक की ओर देखा। उसकी नाक पर आध इंच लंबा दाग़ था। कंदन सोचने लगा, पहले जो व्यक्ति दिखाई दिया, वह चोर होगा। उसका दाग़ असली है या नकली, उसने परखकर नहीं देखा था। वह तो भैंसों को हड़प ले गया है। यदि यह व्यक्ति सचमुच उसका भाई हो तो वह अपने पिता के वचन का पालन कैसे कर सकता है?

फिर सोचा-"शायद यह भी चोर हो?" यों सोचकर उसने उस आगंतुक से कई सवाल किये, तो सही जवाब पाया, साथ ही उस व्यक्ति ने कुछ और घटनाओं की याद दिलाई।

इस पर कंदन ने ये सारी बातें चन्दन को कह सुनाईं।

"कंदन, इस समय तुमने मुझ से जैसे सवाल किये, वैसे सवाल उससे भी पूछने थे। भैंसों की चिंता मत करो। खो गईं तो कोई बात नहीं।" चन्दन ने समझाया।

"नहीं, ऐसा कभी नहीं हो सकता। पिता की इच्छा का पालन होना चाहिए। तुम मेरे हिस्से की भैंसों को ले लो। मैंने जो भूल की, उसका यही प्रायश्चित्त है।" कंदन ने जवाब दिया।

इसके बाद चन्दन ने गाड़ीवाले को बुलाकर आदेश दिया कि गाँव के बाहर बंधी भैंसों को हांक लावे, तब बोला-"कुछ दिन पहले जो दरिद्र यहाँ आया था, वही मैं हूँ। तुमने मेरे दाग और भैंसों की बात सब से कह डाली है। किसी को परखे बिना विश्वास नहीं करना चाहिए। यही बात तुम्हें समझाने के लिए मैंने यह नाटक रचा। मेरी हालत बड़ी अच्छी है। मेरी संपत्ति को हम दोनों बराबर बांट लेंगे तो पिताजी की आत्मा को शांति मिलेगी।" चन्दन ने समझाया!

शिष्टाचार

दो पड़ोसी गाँवों के व्यक्ति मंगल और मोती एक हाट में मिले। अपने घर के लिए आवश्यक चीज़ें ख़रीदकर चल पड़े। जहाँ पर उन दोनों के रास्ते अलग होनेवाले थे, वहाँ तक पहुँचते-पहुँचते अंधेरा फैल गया। अंधेरे में मंगल को अकेले भेजना मोती को पसंद न था, इसलिए वह मंगल को पहुँचाने गया। मंगल ने अपने सामान घर में डाल दिया और मोती को उसके घर पहुंचाने साथ चल पड़ा।

मोती ने अपने सामान घर में डाल दिये और कहा–"चलो, बड़ी देर हो गई। मैं तुम्हें तुम्हारा घर पहुँचा देता हूँ।" यों कहकर मंगल भी मोती के साथ चल पड़ा। घर पहुँचने पर मोती ने मंगल से कहा–"सर्दी भी पड़ रही है, वर्षा भी होनेवाली है। तुम अकेले नहीं जा सकते, चलो, मैं भी तुम्हारा साथ देता हूँ।" यों कहते दो कंबल और दो छाते लेकर मोती भी मंगल के घर तक पहुँचा।

इस तरह वे दोनों एक के गाँव से दूसरे के गाँव तक सर्दी और वर्षा में रात भर घूमते रहें। आख़िर मंगल के गाँव के पटवारी का नौकर मोती का गाँव जा रहा था। उसने मंगल को वापस लौटाकर मोती के घर तक उसका साथ दिया।

व्यर्थ आदेश

कई शताब्दियों के पूर्व राजा शूरसेन आदित्यपुरि पर शासन करता था। उसका एक मात्र पुत्र चन्द्रसेन था।

एक बार आदित्यपुरि राज्य पर पड़ोसी देश के राजा ने आक्रमण किया। उस वक़्त राजा शूरसेन बीमार था, इस कारण उसने अपने पुत्र के नेतृत्व में युद्ध करने का प्रबंध किया। चन्द्रसेन जब युद्ध भूमि में जा रहा था, तब शूरसेन ने उसे समझाया—"बेटा, युद्ध का नेतृत्व करने का अनुभव तुम्हें नहीं है। मगर हमारे सेनापति अनुभवी हैं, तुम उन लोगों के निर्णयों का पालन करके विजयी हो लौट आओ।"

चन्द्रसेन ने अपने पिता की बातों को सावधानी से नहीं सुना। क्यों कि दो वर्ष पूर्व शूरसेन के नेतृत्व में जो युद्ध हुआ था, उसमें वह युद्धक्षेत्र से भाग आया था। उसके साथ सेनापति तथा सेनाएँ भी भाग आई थीं, इस वजह से शत्रु ने उन पर बड़ी आसानी से विजय प्राप्त की थी।

उस घटना को स्मरण कर चन्द्रसेन इस निर्णय पर पहुँचा कि विजय एवं पराजय सेना का नेतृत्व करनेवाले के शौर्य एवं पराक्रम पर ही निर्भर होती है, किंतु सेनापति तथा सेनाओं का पराक्रम बिलकुल काम नहीं देता।

युद्ध प्रारंभ हो गया। चन्द्रसेन को दो दिन की लड़ाई के बाद लगा कि उसकी विजय निश्चित है। मगर तीसरे दिन ऐसा मालूम हुआ कि उसकी सेनाओं के पैर उखड़ते जा रहे हैं। उसने सोचा कि अब उसकी हार निश्चित है, सेनापतियों को आदेश दिया—"अब तुम लोग युद्ध समाप्त करके वापस लौट जाओ, और

रतनलाल कौल

सेनाएँ इकट्ठा करके फिर से हम लोग युद्ध भूमि में आ जायेंगे ।"

परंतु युद्ध में अनुभव रखनेवाले सेनापतियों ने चन्द्रसेन को समझाया– "युवराज, इस वक़्त हमारा युद्धभूमि से पीछे हटने का मतलब होगा, हाथ लगी विजय को हम लात मार रहे हैं! हम लोग विजय पाने की स्थिति में तैयार हैं, आप कृपया विश्राम कीजिए ।"

"क्या तुम लोग मेरी आज्ञा का तिरस्कार करके सेनाओं का सर्वनाश करना चाहते हो?" चन्द्रसेन ने डांटा ।

मगर सेनापतियों ने चन्द्रसेन की आज्ञा की उपेक्षा करके युद्ध किया और शत्रु पर विजय प्राप्त की। इस पर चन्द्रसेन ने अनुभव किया कि उसका अपमान किया गया है। विजयश्री को वरण कर लौटे हुए अपने पुत्र तथा सेनापतियों का शूरसेन ने सम्मान किया। लेकिन अपने पुत्र को उदास देख राजा ने इसका कारण पूछा ।

चन्द्रसेन ने अपने पिता को सारा वृत्तांत सुनाया । इस पर शूरसेन ने कहा– "तुम्हें देखने पर मुझे एक पुरानी कहानी याद आ रही है, सुनो ।"

शूरसेन ने यों कहा : अजीकर्त नामक एक आचार्य के गुरुकुल में विद्या समाप्त कर घर लौटते हुए एक मुनिकुमार एक राज्य में पहुँचा। उस वक़्त उस देश में आपत्कालीन स्थिति घोषित हुई थी। शत्रु के गुप्तचर सर्वत्र फैले हुए थे, इस कारण सभी दिशाओं में सिपाही आने-जानेवाले लोगों की गहरी जांच करते थे। उसी संदर्भ में एक सिपाही ने मुनिकुमार को रोककर पूछा– "तुम क्या हमारे मित्र हो या शत्रु?"

"मैं न मित्र हूँ और न शत्रु हूँ ।" मुनिकुमार ने दार्शनिक की भांति उत्तर दिया ।

सिपाही ने मुनिकुमार से जो भी सवाल पूछे, उन सबका उत्तर उसने

अस्पष्ट रूप में दिया। इस पर मुनिकुमार के प्रति सिपाही का संदेह बढ़ गया और उसको ले जाकर राजा के सामने हाजिर किया। राजा ने मुनिकुमार से जो सवाल पूछे, उनका भी उत्तर उसने कुछ उसी ढ़ंग से दिया। राजा ने सोचा कि यह व्यक्ति अवश्य शत्रु का गुप्तचर होगा, उसे मौत की सजा दी।

इसके बाद मुनिकुमार का शिरच्छेद करने सिपाही ले जा रहे थे, तब उसके एक सहपाठी ने मुनिकुमार को उस हालत में देख राजा से कहा–"महाराज, यह युवक अजीकर्त मुनि के गुरुकुल का छात्र है, मेरा सहपाठी है। यह गुप्तचर नहीं, बल्कि शिक्षा समाप्त कर अपने देश को लौट रहा है।"

राजा ने मुनिकुमार को मुक्त करके अजीकर्त मुनि को बुला भेजा। अजीकर्त को देख मुनिकुमार ने प्रणाम किया और कहा–"गुरुदेव! मैंने केवल इसी दृष्टि से उत्तर दिये कि मानवों के बीच अंतर केवल मिथ्या के दृष्टिकोण से ही देखे जाते हैं, तो मेरी जान पर आ पड़ी।"

"बेटा, दर्शनिक शैली में बात करना निरर्थक है। तुम जो भी बोलो, अनुभव पूर्वक बोलो। तुम्हारे मन की बातें सहज ही लोगों की समझ में आ जावे। वरना तुम्हारी बातों का कोई मूल्य नहीं होता।" अजीकर्त ने समझाया।

राजा शूरसेन ने यह कहानी सुना कर चन्द्रसेन से कहा–"युद्ध विद्या में मेरा पूर्ण अनुभव है, इसलिए मैं जब युद्धक्षेत्र से लौटा, तब मेरे सेनापति भी मेरे साथ लौट आये, लेकिन तुम युद्ध में अनुभव नहीं रखते। इसलिए तुमने जब युद्धक्षेत्र से लौटने को कहा तब इन लोगों ने तुम्हारी आज्ञा का उल्लंघन किया। पर हमारी सेनाओं ने विजय प्राप्त की। यह मत समझो कि सेनापतियों ने तुम्हारा अपमान किया है, हमारी सेनाओं की विजय हमारी विजय है, तुम्हारी विजय है।"

झूठे वादे

लक्ष्मीपुर में उपेन्द्र नामक एक गरीब आदमी था। वह अकेला था। रोज वह मजदूरी करके थोड़े पैसे कमा लेता और अपना पेट भर लेता। एक बार वह बीमार पड़ा। वह इतना कमज़ोर हो गया कि वैद्य के पास जाने और दवा लाने की भी ताक़त उसमें न थी। इसलिए उपेन्द्र ने कालीमाता की याद करके मनौती की–"काली माई, आप की कृपा या शक्ति के द्वारा मैं चंगा हो गया तो मैं आप को एक मोटे-ताजे भैंसे की बलि चढ़ाऊँगा।"

इस मनौती के बाद धीरे-धीरे उसकी बीमारी जाती रही। जब उपेन्द्र बिलकुल चंगा हो गया, तब तक वह मनौती की बात भूल गया। कालीमाता ने सोचा कि उपेन्द्र से माँगने पर ही वह अपनी मनौती पूरा करेगा, कालीमाई ने उपेन्द्र को दर्शन देकर मनौती की बात याद दिलाई। इस पर उपेन्द्र घबरा कर बोला–"माई जी! मैं तो बिलकुल कंगाल हूँ। आप जानती हैं कि भैंसे को खरीदने की ताक़त मैं नहीं रखता हूँ। मैं आप को एक खरगोश की बलि चढ़ाऊँगा, क्षमा कर दीजिए।"

उपेन्द्र की बात मानकर देवीजी अदृश्य हो गई। कई दिन बीत गये। कालीमाई ने उपेन्द्र को एक बार उसकी मनौती की बात याद दिलाकर पूछा–"बेटा! तुमने कहा, भैंसे की बलि न चढ़ा सकोगे। मगर खरगोश की बलि चढ़ाने में देरी क्यों करते हो?"

उपेन्द्र ने नम्रतापूर्वक जवाब दिया–"माईजी! मैं प्रति दिन खरगोश की खोज में जाता हूँ। लेकिन मैं उसकें साथ तेजी से दौड़कर उसे पकड़ नहीं

दिलीप सिंह

पाता हूँ। खरगोश से कहीं अधिक कबूतर का मांस स्वादिष्ट होता है। इसलिए में आपको कबूतर की बलि जरूर चढ़ाऊँगा।" कालीमाता ने उपेन्द्र की बात मान ली।

इसके बाद उपेन्द्र ने कबूतर को पकड़कर उसकी बलि चढ़ाने का कोई प्रयत्न नहीं किया। कालीदेवी के दर्शन देकर मनौती की बात याद दिलाने पर उसका उत्तर भी उसने सोच रखा था।

कालीदेवी ने एक बार और दर्शन देकर बलि की बात याद दिलाई। उपेन्द्र ने कहा-"माईजी! आप जानती हैं कि कबूतर आसमान में उड़ता है। में जब भी उसे पकड़ने की कोशिश करता हूँ वह फुर्र से उड़ जाता है। क्या मैं पतिंगे की बलि चढ़ा दूं?"

कालीदेवी ने सोचा कि चाहे जो भी हो, संतुष्ट हो जाऊँगी, यह सोचकर उपेन्द्र की बात मान ली। एक महीना और बीत गया। उपेन्द्र इस बार भी अपनी मनौती की बात भूल गया था। कालीदेवी से सहा नहीं गया। उन्होंने पुन: दर्शन देकर कहा-"उपेन्द्र! तुमने भैंसे की बलि चढ़ाने का वादा किया, फिर खरगोश की बात कही, खरगोश के बदले कबूतर, कबूतर के बदले पतिंगे की बलि देने का वादा किया। मैं और कितने दिन तक इंतजार करूँ? मैं भूखी हूँ, जल्दी बलि चढ़ा दो।"

इस पर उपेन्द्र ने दोनों हाथ जोड़कर कालीमाता को प्रणाम करते हुए कहा-"माईजी! आप तो जगन्माता हैं! इस विशाल विश्व में आप अपने मन चाहे भोजन का स्मरण करेंगी तो आप को प्राप्त हो जाएगा। तिस पर एक साधारण मानव से आप का मांगना कहाँ तक उचित है? क्या पतिंगे की बलि चढ़ाने मात्र से आप की भूख मिट जाएगी?" यों कहकर उपेन्द्र अपने रास्ते चला गया।

कालीदेवी उपेन्द्र की बातें सुन ठगी सी रह गई।

१२. सीताजी के दर्शन

हनुमान ने लंकानगर में अनेक प्रकार के राक्षसों को देखा। उन में कुछ लोग यज्ञकार्य में निमग्न थे, कुछ लोग जटाऐं धारण किये हुए थे, तो कुछ लोग सिर मुडाये हुए थे। कुछ लोग बैल का चर्म धारण किये हुए थे। कुछ लोग अभिचार होम करके शत्रु का अहित कर रहे थे, कुछ लोग विभिन्न प्रकार के हथियार धारण कर टहल रहे थे। कुछ लोग विकृत आकृति के थे तो कुछ लोग नाटे, काले, लंबे कानवाले, सुंदर शरीरवाले, ध्वजाऐं धारण किये हुए लोग भी थे।

रात बीतने को थी, आसमान में चन्द्रमा प्रकाशमान था। हनुमान ने रावण के महल में प्रवेश किया। कुछ नारियाँ संगीत का गान कर रही थीं। कुछ औरतें अपनी देह पर चंदन का लेप कर रही थीं। कुछ महिलाऐं पुरुषों के साथ विहार कर रही थीं तो कुछ वनिताऐं निद्रा में निमग्न थीं।

हनुमान ने इस विचार से उन सब नारियों को सतर्क होकर देखा कि कहीं उनमें सीताजी दिखाई दें। मगर उसे सीताजी जैसी नारी कहीं दिखाई नहीं दी। इस पर हनुमान चिंता में डूब गया। वह कामरूपी था, इसलिए अपने लिए अनुकूल रूप धारण करके सारी लंका में घूमकर पुनः रावण के महल में लौट आया।

रावण का महल देखने मे अद्‌भुत था। वह चांदी से निर्मित था। पर सोने से उसकी सजावट की गई थी। उसमें विभिन्न रंगों के तोरण बंधे थे, किवाड़ सुंदर ढ़ंग से अलंकृत थे। उत्तम नस्ल के घोड़े व हाथी वहाँ पर मौजूद थे। महान शूर राक्षस उस महल का पहरा दे रहे थे। नारियाँ व पुरुष इधर उधर घूम रहे थे। सर्वत्र सुख-वैभव का साम्राज्य था। वह महल देखने में इन्द्रभवन जैसा था और लंका नगर की शोभा बढ़ानेवाला था।

हनुमान रावण के महल का चक्कर काटने लगा। उस महल में खाट, मेज़, आसन, पात्र सब स्वर्ण तथा रत्नों से निर्मित हो सोने के प्रतीत हो रहे थे। रत्न खचित खिड़कियों में पक्षियों के पिंजड़े लटक रहे थे। हनुमान ने पुष्पक विमान को भी देखा। वह यों तो कुबेर का था। उसमें पहाड़, पृथ्वी, फूलों के पौधे, कमलों से भरे तड़ाग भी चित्रित हैं। वह एक बहुत बड़ा विमान था। कहा जाता है कि उसमें असंख्य लोग सवार हो सकते हैं। उस विमान को देख हनुमान विस्मय में आ गया। वह रावण के सारे महल को देखने चल पड़ा। दो-तीन बार चक्कर लगाने पर भी उसे ऐसे लगा कि उसने सारे महल को देखा नहीं है। पर उसको सीताजी कहीं भी दिखाई न दीं।

रावण के महल के सारे कमरों को छान डालने के बाद हनुमान रावण के अंत:पुर में पहुँचा जहाँ रावण की पत्नियाँ रहा करती थीं। उनमें राक्षस नारियाँ थीं, रावण के द्वारा अपने पराक्रम के बल पर लाई गई राज कन्याएँ भी थी। साथ ही रावण पर आसक्त हो आई हुई नारियाँ भी, सभी कक्षों में दीपक जल रहे थे।

रावण के अंत:पुर में अनेक नारियाँ निद्रावस्था में थीं। वे सुसज्जित बिस्तरों

पर नाना प्रकार के वस्त्र, आभूषण, तथा पुष्पमालाएँ धारणकर लेटी हुई थीं। आधी रात बीत चुकी थी, साथ ही सभी नारियाँ मध्यपान किये हुए थीं, इसलिए जहाँ जो बैठी थीं, वहीं पर विभिन्न भंगिमाओं में अस्त-व्यस्त सोये हुये थीं।

हनुमान ने बड़ी सावधानी से सबके चेहरों को देखा। उसने खाट पर सोने वाले रावण को भी देखा। रावण के हाथ पाँच सिरोंवाले महा सर्पों के सदृश्य प्रतीत हो रहे थे। उसके शरीर पर रक्तचंदन मला हुआ था। देखने में वह पर्वत जैसे लग रहा था। उसके सारे शरीर पर आभूषण लदे हुए थे।

रावण की पत्नी मंदोदरी एक और खाट पर लेटी हुई थी। उसके सुंदर रूप एवं यौवन को देख हनुमान यह सोचकर प्रसन्न हुआ कि वह जरूर सीताजी होंगी।

लेकिन दूसरे ही क्षण उसकी प्रसन्नता जाती रही। क्या रामचन्द्रजी के वियोग में सीताजी अपने को अलंकृत करेंगी? क्या वह अन्न ग्रहण करेंगी! निश्चिंत हो सो सकेंगी? क्या वह पराये पुरुष की पत्नी बन सकेंगी? तब जाकर हनुमान ने निर्णय कर लिया कि वह नारी सीताजी न होंगी। फिर वहाँ से चल पड़ा।

हनुमान ने सीताजी के वास्ते हर झाड़ी व हर चित्रशाला का अन्वेषण किया। उसके मन में एक शंका उत्पन्न हुई—क्या सीताजी जीवित नहीं हैं? रावण को स्वीकार न करने पर उसने सीताजी का वध तो नहीं किया? अथवा इन भयंकर राक्षस नारियों को देख सीताजी के प्राण पखेरू उड़ चले नहीं गये? सुग्रीव ने जो अवधि निर्द्धारित की थी, उसके बीते कई दिन हो गये हैं। ऐसी हालत में सीताजी को देखे बिना वापस कैसे लौटे? यदि वह बिना सीताजी के दर्शन किये लौट जाय तो क्या सब कोई नहीं पूछेंगे—"तुम आखिर

सीताजी को उठाये लाते वक़्त वह कहीं गिर तो नहीं गईं? या डरकर समुद्र में तो गिर नहीं गईं? अथवा रामचन्द्रजी के वियोग की चिंता में घुल-घुलकर मर नहीं गईं?

आखिर हनुमान ने निश्चय कर लिया कि यदि वह सीताजी को देख नहीं पायेगा तो समुद्र तट पर चिता बना कर उसमें जल जाएगा! फिर उसे लगा कि रावण का वध करने पर बदला चुक जाएगा। या नहीं तो रावण को यज्ञ-पशु की भांति पकड़ ले जाकर रामचन्द्रजी के सामने उपस्थित किया जा सकता है।

यों सोचनेवाले हनुमान की दृष्टि दूर पर ऊंचे वृक्षोंवाले एक वन पर पड़ी। वह अशोकवन था। हनुमान ने अब तक उस वन की खोज नहीं की थी। उसका पता भी उसे अभी-अभी लगा था। वहां पर भी हनुमान ने सीताजी की खोज करने का निश्चय किया।

फिर क्या था, वह अत्यंत वेग पूर्वक उछलते-कूदते अशोकवन की चहार दीवारी तक पहुंचा। उसने अपनी देह को अत्यंत लघु बनाया। तब उसने देखा। वह वसंत ऋतु के आगमन का, समय था। इसलिए उसमें सालवृक्ष

गये ही क्यों?" इसका वह क्या जवाब देगा?

चाहे जो हो, चिंता करते बैठे रहने से कोई प्रयोजन सिद्ध न होगा। यह सोचकर हनुमान दूर के प्रदेशों को देखने निकल पड़ा। वह पहाड़ों तथा घाटियों में गया। भूगर्भ गृहों में ढूंढा, जंगल व कुएँ छान डाले। उसे असंख्य राक्षस नारियां दिखाई दीं। पर सीताजी दिखाई न पड़ीं। सुंदर नारियों के दिखाई देने पर उसकी आशा जाग उठती, पर जब उसे यह मालूम होता कि उनमें सीताजी नहीं हैं, वह चिंता में डूब जाता। क्या रावण के द्वारा

अशोकवन में एक क्रीड़ा पर्वत भी था जिस पर ऊँचे व विचित्र शिखर, पत्थरों से निर्मित अनेक भवन तथा वृक्ष भी थे। उस पर से एक झरना बह रहा था। वन में एक कुआं था जिस के चारों तरफ़ ऊँचे महल व सोने के टीले भी निर्मित थे।

हनुमान ने घने पत्रोंवाले वृक्ष पर बैठकर चारों ओर दृष्टि दौड़ाई। थोड़ी दूर पर उसे एक सफ़ेद चैत्य प्रासाद दिखाई दिया। उसमें एक हज़ार स्तम्भ थे। उसी प्रदेश में हनुमान को सीताजी दिखाई दीं।

अशोकवृक्ष, चंपकवृक्ष, उद्दालकवृक्ष, नाग वृक्ष, आम्रवृक्ष, कपिमुखी इत्यादि में मंजरियां लग रही थीं। उन वृक्षों के फूलों से सुगंध व्याप्त हो रही थी। अनेक वृक्षों से लताएं लिपटी हुई थीं।

चहार दीवारी पर बैठा हनुमान तीर की भांति वृक्षों में कूद पड़ा। पेड़ों पर वह उछलता गया। पेड़ों पर सोनेवाले पक्षी चौंककर जाग उठे और कलरव करने लगे। वृक्षों पर के फूल उसके शरीर पर झर उठे। अशोक वन में हनुमान ने असंख्य तड़ाग, टीले, सोने व चान्दी से तैयार किये गये अनेक कृत्रिम वृक्षों को भी देखा।

सीताजी कृश गात्री हो गई थीं। मैली पीली साड़ी पहने हुए थीं। दुःख के मारे वह आंसू बहा रही थीं। उनके चतुर्दिक राक्षस नारियां फैली हुई थीं। रावण जब सीताजी को उठा ले जा रहा था, तब उसने सीताजी को देखा था। अतः वह सीताजी को बड़ी आसानी से पहचान तो पाया, पर इस वक़्त उनका रूप बदला हुआ था। सीताजी ने ऋश्यमूक पर्वत पर अपने कुछ आभूषण गिराये थे। जो आभूषण सीताजी के शरीर पर थे, उनका वर्णन करके रामचन्द्रजी ने हनुमान को परिचय कराया था। उन आभूषणों को हनुमान

पहचान पाया। अलावा इसके सीताजी ने जो आभूषण गिराये थे, उनकी जगह अब कोई आभूषण न थे। यद्यपि सीताजी को सही ढंग से पहचानना थोड़ा कठिन था, फिर भी हनुमान ने उन आभूषणों के आधार पर निश्चय कर लिया कि वे ही सीताजी होंगी। उसका आनंद उमड़ पड़ा। राक्षस नारियों की दृष्टि से बचने के लिए हनुमान टहनियों की आड़ में छिप गया और राक्षस नारियों को परखने लगा।

रात काफी बीत चुकी थी। राक्षसों के द्वारा वेदाध्ययन करना उसे सुनाई दिया। उसी समय मंगलवाद्य भी बज उठे। रावण जाग उठा। जागते ही उसे सीताजी की याद आई। तत्काल वह अपने को अलंकृतकर अशोकवन में चला आया। उसके साथ क़रीब सौ देवता नारियाँ तथा गंधर्व नारियाँ भी चली आईं। कुछ नारियाँ सोने के मशाल धारण किये हुए थीं। कुछ और नारियाँ चँवर व पंखे पकड़े हुए थीं। कुछ नारियाँ भाले पकड़े हुए थीं तो कुछ नारियाँ स्वर्ण पात्रों में जल लिये रावण के आगे-आगे चल पड़ीं। एक नारी ने रावण के वास्ते छत्र धारण किया हुआ था।

नारियों के चलते वक़्त नूपुरों की जो ध्वनि हुई, उस ध्वनि ने हनुमान

को उस ओर आकृष्ट किया। दीपकों के प्रकाश में हनुमान ने रावण को देखा। वह कुतूहल से भर उठा कि देखें कि रावण क्या करनेवाला है, इसलिए नीचे की डाल पर उतर आया। पत्रों की ओट में छिपकर ताकता रहा।

रावण सीधे आकर सीताजी के निकट रुक गया।

दूर से ही सीताजी रावण को देख काँप उठीं। पैर समेटे वक्ष पर हाथ रखे सीताजी विलाप करने लगीं। इस ख्याल से उन्हों ने चारों तरफ़ दृष्टि दौड़ाई कि कोई उनकी रक्षा करनेवाले भी तो नहीं।

मूर्तीभूत शोक देवी जैसी बैठी सीताजी से रावण ने यों कहा–"सीते! मुझे देख भयभीत हो इस तरह सिकुड़कर क्यों बैठ जाती हो? मैं तुम्हारे सौंदर्य पर मोहित हूँ। मुझको स्वीकार करो। यहाँ पर तुम्हें मेरे तथा और किसी का भी डर नहीं है! मुझ से तुम प्रेम नहीं करती हो, इसलिए मैं तुम्हारा स्पर्श नहीं करूँगा। तुम दुखी मत हो जाओ। मैले वस्त्रों के साथ बाल संवारे बिना इस तरह चिंतित बैठे रहना तुम्हारे लिए उचित नहीं है। मुझे स्वीकार करके अच्छे आभूषण धारण करो। उत्तम किस्म के मध्य पिओ। अच्छी चारपाइयों पर लेट जाओ। खेल व संगीतों के आनंद के साथ अपना समय बिताओ। तुम सुखी रहो। अपने यौवन को वृथा मत हो जाने दो। इस सृष्टि भर में तुम्हारी जैसी रूपवती कोई नहीं है। यह भ्रम अपने मन से निकाल दो कि मैं पराया पुरुष हूँ। मैं तुम्हें अपनी पट्टमहिषी बना लूँगा। तुम्हारा दास बन जाऊँगा। तुम जो भी चाहती हो, मुझे आज्ञा दो। जंगलों में भटकनेवाले राम की चिंता तुम क्यों करती हो? यह मत सोचो कि वह अभी तक जीवित है! वह तुम्हें देखने तक आ नहीं सकेगा!"

न कश्चि च्चंडकोपाना
मात्मीयो नाम भूभुजाम्,
होतार मपि जुह्वानाम्
स्पृष्टो दहति पावकः ॥ १ ॥

[जो राजा अत्यंत क्रोधी होता है, वह अपने व पराये का विवेक नहीं रखता। अग्नि में होम करनेवाला व्यक्ति भी यदि उसे छूता है तो वह उसको जला देती है।]

ज्वलति चलितेंधनोग्निः
विप्रकृतः पन्नगः फणम् कुरुते;
प्रायः स्वम् महिमानम्
क्षोभात् प्रतिपद्यते जंतुः ॥ २ ॥

[जलनेवाली लकड़ियों को हिलाने पर अग्नि प्रज्वलित होती है। सांप को छेड़ दे तो वह फण फैला देता है। इसी प्रकार जानवर दुख पाकर अपनी ताक़त को बढ़ाता है।]

अनिर्वेद श्रियो मूलम्
अनिर्वेदः परम् सुखम्
अनिर्वेदो हि सततम्
सर्वार्थेषु प्रवर्तकः ॥ ३ ॥

[दुख रहित रहना संपत्ति का मूल तथा सुख का कारण होता है। साथ ही सदा समस्त प्रकार के कार्य करने के लिए अनुकूल भी होता है।]

प्रकृति के नियम

Photo by Pranlal K. Patel

पुरस्कृत परिचयोक्ति

मैं तो हूँ जंगल का राजा

प्रेषक : एम. एल. सिंह

Photo by Prafulla Chandra Dhir
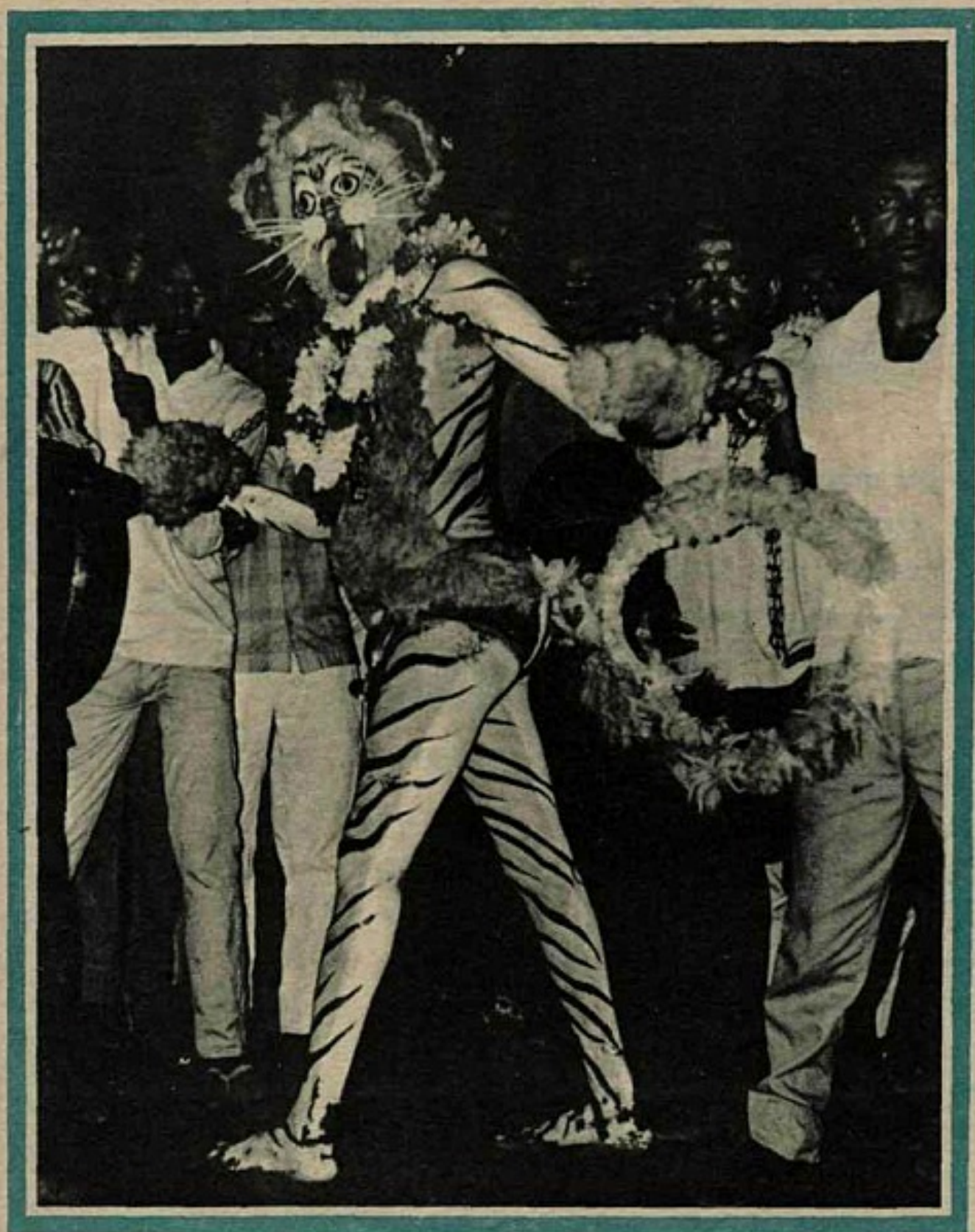
८७, बहादूर गंज,
इलाहाबाद

हिम्मत हो तो सामने आ जा

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार २०)

★

★ परिचयोक्तियाँ जनवरी १० तक प्राप्त होनी चाहिए। सिर्फ़ कार्ड पर ही लिख भेजें।

★ परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्द की हों और परस्पर संबंधित हों, पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ सितम्बर के अंक में प्रकाशित की जायेंगी!

चन्दामामा

इस अंक की कथा-कहानियाँ-हास्य-व्यंग्य

Printed by B. V. REDDI at The Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for Chandamama Publications, 2&3, Arcot Road, Madras-600 026. Controlling Editor: 'CHAKRAPANI'

चन्दामामा के ग्राहकों को सूचना

यदि आप अपना पता बदल रहे हों, तो पांचवीं तारीख से पहिले ही अपनी ग्राहक-संख्या के साथ, अपना नया पता सूचित कीजिये। यदि विलम्ब किया गया, तो अगले मास तक हम नये पते पर 'चन्दामामा' न भेज सकेंगे। आपके सहयोग की आशा है।

डाल्टन एजन्सीस, मद्रास-६०० ०२६

वार्षिक शुल्क के लिए सम्पर्क करें : डौल्टन एजेंसीज़, चन्दामामा बिल्डिंग मद्रास– ६०००२६

सिर्फ़ रूबी डस्ट चाय में ही आप पाते हैं तीनों खूबियाँ

१. चटपट लिकर २. मज़ेदार खुशबू ३. हर पैकेट से और ज़्यादा कप चाय
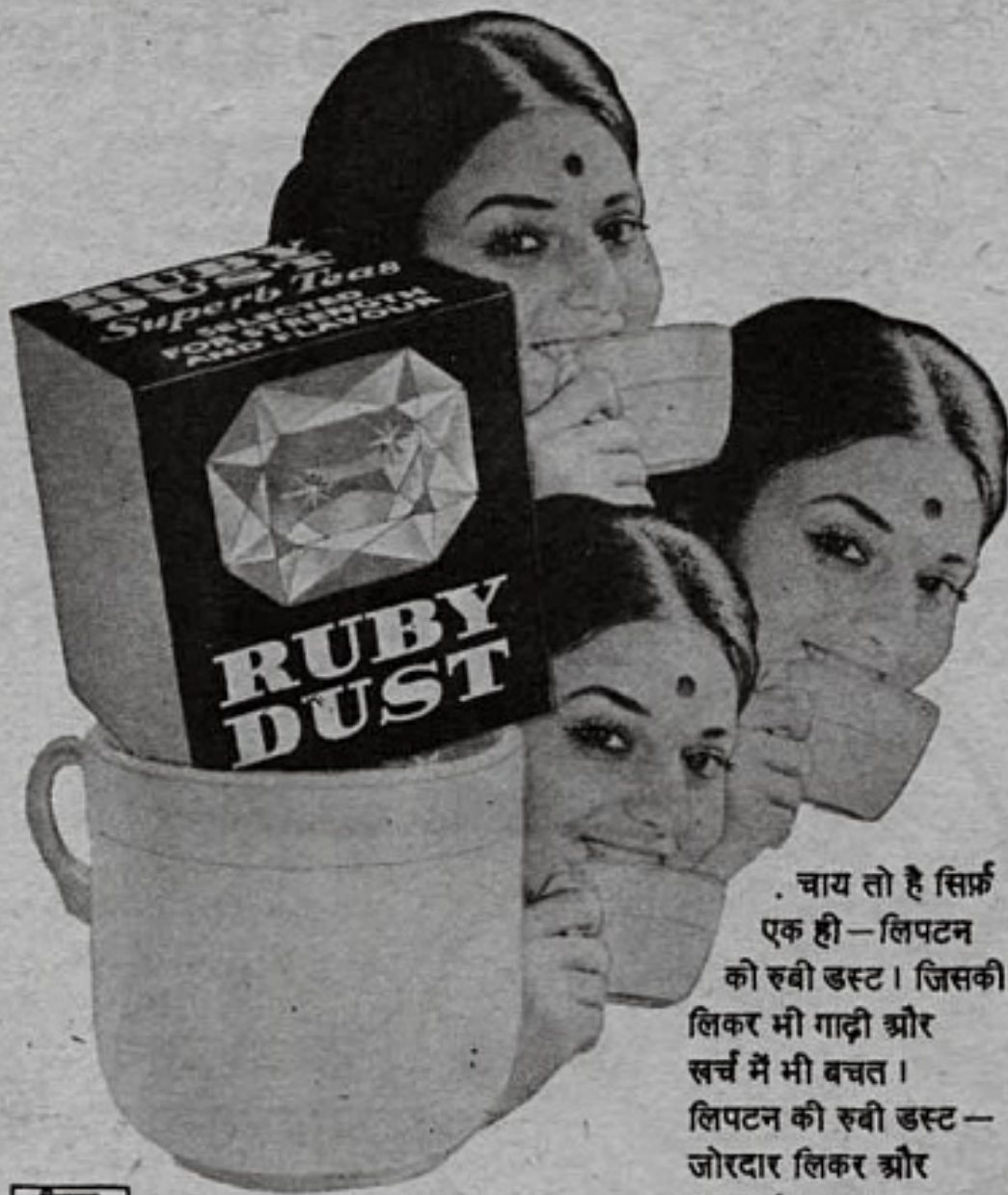
. चाय तो है सिर्फ़
एक ही — लिपटन
की रुबी डस्ट। जिसकी
लिकर भी गाढ़ी और
खर्च में भी बचत।
लिपटन की रुबी डस्ट —
जोरदार लिकर और
खुशबू से भरपूर।
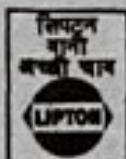
लिपटन की रूबी डस्ट हर पैकेट से पायेंगे मज़ेदार और ज़्यादा कप चाय

LRDC-10 HIN

ये लीजिये
आपको लुभानेवाले
क्रॅकीज़
सांता क्लॉस की ही तरह एन. पी. भी बच्चोंके लिए स्वादिष्ट मिठाइयोंका खज़ाना लुटाने लाते हैं। एन. पी. क्रॅकीज़ च्युइंग गम—बबल गम भी—जो पेपरमिंट, पाइनएपल, टूटी फ्रूटी, ऑरेंज और अनोखे, सुपारीके स्वादयुक्त होते हैं।
इसके अलावा बॉनबाइट—जो मलाईदार और अप्रतिम स्वादिष्ट मिठाई है, और फलोंके रुचिकर स्वादवाले बालगम्स।
आपकी रुचि-पसंद च्युइंग गम
NP
CRACKIES
bonbite
NP — ISI गुणवत्ता के निशानवाले अद्वितीय च्युइंग गम्स और बबल गम्स।
अपनी जेबोंमें हमेशा NP – आपकी पसंद की च्युइंग गम्स रखिए।
दि नॅशनल प्रॉडक्टस
बंगलूर
Dattaram-NP-1 HINDI

Photo by: **Smt. I. UMA RANI**

MILITARY PARADE

मित्र-भेद